ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५८ अंक -१० महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र मई (द्वितीय) २०१६

महर्षि दयानन्द सरस्वती

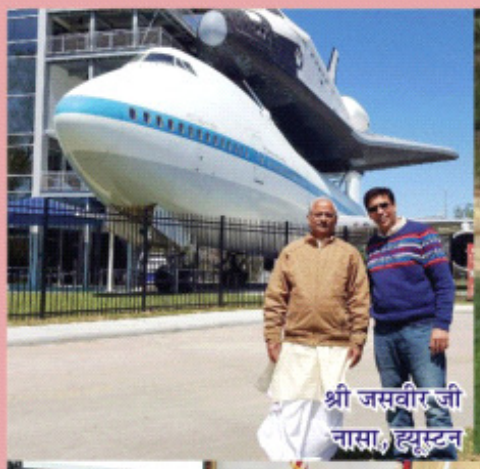

श्री जसवीर जी
नासा, ह्यूस्टन

डॉ. धर्मवीर जी के साथ श्री भास्कर सेन गुप्ता,
श्री सुरेन्द्र मेहता एवं श्रीमती वीना मेहता

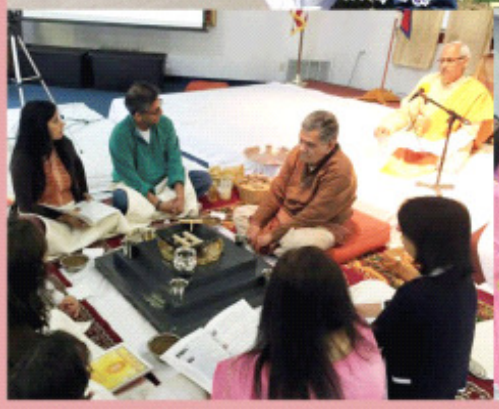

परोपकारिणी सभा के प्रधान डॉ. धर्मवीर जी की अमेरिका प्रचार यात्रा

वैदिक-टैम्पल अटलांटा के पुरोहित पंडित वेदश्रमी जी

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५८ **अंक** : १०
दयानन्दाब्द: १९२
विक्रम संवत्: वैशाख शुक्ल, २०७३
कलि संवत्: ५११७
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११७

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-
भारत में
वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में
वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

मई द्वितीय २०१६

अनुक्रम

१. मूर्तिपूजा और ऋषि दयानन्द	सम्पादकीय	०४
२. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०७
३. ईश्वर की सिद्धि में प्रत्यक्षादि प्रमाण...	ब्र. राजेन्द्रार्य	१५
४. जीवन का प्रथम प्रश्न	इन्द्रजित् देव	१९
५. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		२३
६. पुस्तक परिचय	देवमुनि	२४
७. जिज्ञासा समाधान-१११	आचार्य सोमदेव	२८
८. पुस्तक परिचय	डॉ. धर्मवीर	३१
९. शैक्षणिक केरल यात्रा का वृत्तान्त:	ब्र. वरुणदेवार्य:	३२
१०. संस्था-समाचार		३५
११. स्तुता मया वरदा वेदमाता-३४		३९
१२. प्रतिक्रिया		४०
१३. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com
- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

मूर्तिपूजा और ऋषि दयानन्द

पिछले अंक का शेष भाग.....

महर्षि दयानन्द मूर्तिपूजा को आर्थिक हानि का कारण मानते हैं। इससे सामाजिक भ्रष्टाचार को भी बढ़ावा मिलता है। (सत्यार्थप्रकाश ११वाँ समुल्लास मूर्तिपूजा से १५ हानियाँ) मूर्तिपूजा के लिये दिये जाने वाले तर्कों की समीक्षा भी उन्होंने की है। जो लोग मूर्तिपूजा को स्थूल लक्ष्य और ईश्वर तक पहुँचने की सीढ़ी बताते हैं, उनके लिए महर्षि दयानन्द कहते हैं- मूर्तिपूजा सीढ़ी नहीं, खाई है। मूर्तिपूजा गुड़ियों के खेल के समान ब्रह्म तक जाने का साधन मानने वालों को महर्षि दयानन्द अज्ञानी मानते हैं, अत: शास्त्रों का अध्ययन, विद्वानों की सेवा, सत्संग, सत्यभाषाणादि व्यवहार से ही ब्रह्म की प्राप्ति सम्भव है। परमेश्वर को मूर्ति में व्यापक होने से मूर्तिपूजा से परमेश्वर की पूजा हो जाती है- ऐसा मानने वालों के लिए महर्षि दयानन्द का उत्तर है- ''जब परमेश्वर सर्वत्र व्यापक है तो किसी एक वस्तु में परमेश्वर की भावना करना, अन्यत्र न करना- यह ऐसी बात है कि जैसे चक्रवर्ती राजा को सब राज्य की सत्ता से छुड़ा के एक छोटी-सी झोंपड़ी का स्वामी मानना।'' (सत्यार्थप्रकाश, समुल्लास ११वाँ) जो लोग मूर्ति में परमेश्वर की भावना करने की बात करते हैं, उनके लिए महर्षि दयानन्द का उत्तर है- ''भाव सत्य है या झूठ? जो कहो सत्य है तो तुम्हारे भाव के अधीन होकर परमेश्वर बद्ध हो जायेगा और तुम मृत्तिका में सुवर्ण-रजतादि, पाषाण में हीरा-पन्ना आदि, समुद्रफेन में मोती, जल में घृत, दुग्ध, दही आदि और धूलि में मैदा-शक्कर आदि की भावना करके उनको वैसा क्यों नहीं बनाते हो?''

(सत्यार्थप्रकाश, समुल्लास ११वाँ, पृ. ३६८)

मन्त्रों के आवाहन-विसर्जन से देवता के आ जाने और चले जाने की बात पर वे कहते हैं- ''जो मन्त्र पढ़कर आवाहन करने से देवता आ जाता है तो मूर्ति चेतन क्यों नहीं हो जाती? और विसर्जन करने से चला जाता है तो वह कहाँ से आता और कहाँ जाता है? सुनो अन्धो! पूर्ण परमात्मा न आता और न जाता है। जो तुम मन्त्र बल से परमेश्वर को बुला लेते हो तो उन्हीं मन्त्रों से अपने मरे हुए पुत्र के शरीर में जीव को क्यों नहीं बुला लेते? और शत्रु के शरीर में जीवात्मा का विसर्जन करके क्यों नहीं मार सकते? सुनो भाई भोले लोगो! ये पोप जी तुम को ठग कर अपना प्रयोजन सिद्ध करते हैं। वेदों में पाषाणादि मूर्तिपूजा और परमेश्वर का आवाहन, विसर्जन करने का एक अक्षर भी नहीं।'' (सत्यार्थप्रकाश ११वाँ समुल्लास, पृ. ३६९)

जहाँ तर्क युक्तियों से महर्षि दयानन्द ने मूर्ति पूजा का खण्डन किया, वहाँ मूर्तिपूजा वेद विरुद्ध है, इसके लिए भी वेदादिशास्त्रों से प्रमाणों को प्रस्तुत किया। स्तुति प्रार्थना उपासना, ब्रह्म विद्या आदि प्रकरणों में वेद मन्त्रों की व्याख्या करते हुए मूर्तिपूजा की व्यर्थता को सिद्ध किया है- ''जो असम्भूति अर्थात् अनुत्पन्न अनादि प्रकृति कारण की ब्रह्म के स्थान पर उपासना करते हैं, वे अन्धकार अर्थात् अज्ञान और दु:ख सागर में डूबते हैं और सम्भूति जो कारण से उत्पन्न हुए कार्य रूप पृथ्वी आदि भूत, पाषाण और वृक्षादि अवयव और मनुष्यादि के शरीर की उपासना ब्रह्म के स्थान में करते हैं, वे इस अन्धकार से भी अधिक अन्धकार अर्थात् महामूर्ख, चिरकाल घोर दु:ख रूप नरक में गिर के महाक्लेश भोगते हैं।[९]

जो सब जगत् में व्यापक है, उस निराकार परमात्मा की प्रतिमा, परिमाण, सादृश्य वा मूर्ति नहीं है।।[१०]

जो वाणी की इदन्ता अर्थात् यह जल है लीजिए, वैसा विषय नहीं और जिसके धारण और सत्ता से वाणी की प्रवृत्ति होती है उसी को ब्रह्म जान और उपासना कर और जो उससे भिन्न है, वह उपासनीय नहीं। जो मन से 'इयत्ता' करके मनन में नहीं आता, जो मन को जानता है उसी को तू ब्रह्म जान और उसी की उपासना कर। जो उससे भिन्न जीव और अन्त:करण है, उसकी उपासना ब्रह्म के स्थान में मत कर। जो आँख से नहीं दीख पड़ता और जिससे सब आँखें देखती हैं, उसी को तू ब्रह्म जान और उसी की उपासना कर और जो उससे भिन्न सूर्य, विद्युत् और अग्नि आदि जड़ पदार्थ हैं, उनकी उपासना मत कर। जो श्रोत्र से

नहीं सुना जाता और जिससे श्रोत्र सुनता है, उसी को तू ब्रह्म जान और उसी की उपासना कर और उससे भिन्न शब्दादि की उपासना उसके स्थान में मत कर। जो प्राणों से चलायमान नहीं होता, जिससे प्राण गमन को प्राप्त होता है, उसी ब्रह्म को तू जान और उसी की उपासना कर। जो यह उससे भिन्न वायु है, उसकी उपासना मत कर।'' (सत्यार्थप्रकाश ११वाँ समुल्लास, पृ. ३७१)[११]

महर्षि दयानन्द ने वेद में निराकार सर्वव्यापक ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन करने वाले अनेक मन्त्रों का उल्लेख अपने वेदभाष्य और अन्य ग्रन्थों में किया है, सपर्यगात्०, सहस्रशीर्षा०, विश्वतश्चक्षु०, आदि मन्त्र तथा उपनिषद् वाक्यों के प्रमाण दिये हैं।

जहाँ महर्षि दयानन्द ने मूर्तिपूजा का खण्डन किया है, वहीं इस खण्डन से मूर्तिपूजा के अभाव में होने वाली रिक्तता को भी पूर्ण किया है। पञ्चमहायज्ञविधि, संस्कारविधि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में निराकार ब्रह्म की उपासना कैसे की जाती है- इसका भी उल्लेख किया है। मूर्तिपूजा का खण्डन करते हुए देवपूजा का प्रकार बताते हुए वास्तविक देव और उनकी पूजा के प्रकार का भी उल्लेख किया है, यथा ''प्रश्न- किसी प्रकार की मूर्तिपूजा करनी नहीं और जो अपने आर्यवर्त्त में पञ्चदेवपूजा शब्द प्राचीन परम्परा से चला आता है, उसकी यही पञ्चायतन पूजा जो कि शिव, विष्णु, अम्बिका, गणेश और सूर्य की मूर्ति बनाकर पूजते हैं, यह पञ्चायतन पूजा है या नहीं?

उत्तर- किसी प्रकार की मूर्तिपूजा न करना, किन्तु 'मूर्तिमान्' जो नीचे कहेंगे, उनकी पूजा अर्थात् सत्कार करना चाहिए। वह पञ्चदेवपूजा, पञ्चायतन पूजा शब्द बहुत अच्छा अर्थ वाला है, परन्तु विद्याविहीन मूढ़ों ने उसके उत्तम अर्थ को छोड़ कर निकृष्ट अर्थ को पकड़ लिया। जो आजकल शिव आदि पाँचों की मूर्तियाँ बनाकर पूजते हैं, उनका खण्डन तो अभी कर चुके हैं, पर जो सच्ची पञ्चायतन वेदोक्त और वेदानुकूल देवपूजा और मूर्ति पूजा है, सुनो- प्रथम माता- मूर्तिमती पूजनीय देवता, अर्थात् सन्तानों को तन, मन, धन से सेवा करके माता को खुश रखना, हिंसा अर्थात् ताड़ना कभी न करना। दूसरा पिता- सत्कर्त्तव्य देव, उसकी भी माता के समान सेवा करनी। तीसरा- आचार्य जो विद्या का देने वाला है, उसकी तन, मन, धन से सेवा करनी। चौथा अतिथि- जो विद्वान् धार्मिक, निष्कपटी, सबकी उन्नति चाहने वाला जगत् में भ्रमण करता हुआ सत्य उपदेश से सबको सुखी करता है, उसकी सेवा करें। पाँचवाँ स्त्री के लिए पति और पुरुष के लिए स्व-पत्नी पूजनीय है।[१२]

ये पाँच मूर्तिमान् देव जिनके संग से, मनुष्य देह की उत्पत्ति पालन, सत्यशिक्षा, विद्या और सत्योपदेश की प्राप्ति होती है। ये ही परमेश्वर को प्राप्त करने की सीढ़ियाँ हैं। इनकी सेवा न करके जो पाषणादि मूर्ति पूजते हैं, वे अतीव वेदविरोधी हैं। (पृ. ३७५-३७६)

ऋषि दयानन्द के जीवन में जो क्रान्ति मूर्ति की पूजा करने से उत्पन्न हुई थी, वह उनके पूरे जीवन में बनी रही। महर्षि दयानन्द ने अपने भाषण, लेखन, वार्तालाप द्वारा मूर्तिपूजा की निस्सारता को प्रतिपादित किया है। ऐसी पद्धति जो जीवन में लाभ के स्थान पर हानि करती है, जिससे व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक लाभ की कोई संभावना नहीं, जिसके करने से मनुष्य का पतन अवश्यम्भावी है, वह कार्य इस समय में इतने बड़े रूप में कैसे चला? इसके चलने के पीछे क्या कारण है, इनका भी उन्होंने युक्ति प्रमाण पुरस्सर प्रदर्शन किया है। इस प्रकार संक्षेप में कह सकते हैं कि महर्षि दयानन्द ने मूर्तिपूजा के दार्शनिक, सामाजिक, आर्थिक सभी पक्षों का गहराई से अध्ययन किया और साहसपूर्वक समाज के सामने रखा। समाज में जिनको मूर्तिपूजा से प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ मिलता है, वे कभी भी इसका खण्डन देखना नहीं चाहेंगे, परन्तु महर्षि दयानन्द ने अपने प्राणों की परवाह किये बिना इसका प्रबल खण्डन किया और एक निराकार सर्वव्यापक ईश्वर जिसका स्वरूप आर्यसमाज के दूसरे नियम में बताया गया है, उसी की पूजा करने का विधान किया।

स्वामी दयानन्द ने जब भली प्रकार समझ लिया कि मूर्ति पूजा असत्य के साथ पाखण्ड भी है, जिसके द्वारा जनता को भ्रमित करके उनका धन लूटा जा रहा है, उन्हें अकर्मण्य बना कर भीरु परमुखापेक्षी बनाने में समाज का श्रेष्ठ कहा जाने वाला वर्ग लगा है, इससे समाज को जो दिशा और मार्गदर्शन मिलना चाहिए, वह तो नहीं मिला

उसके स्थान पर समाज के रक्षक ही समाज को लूटने वाले बन गये। इसके लिए महर्षि दयानन्द ने जो मार्ग अपनाया, उनमें प्रथम यह था कि समाज में जिन वेदों की प्रतिष्ठा थी, उन वेदों में तथा वेदानुकूल वैदिक साहित्य में मूर्ति पूजा का विधान नहीं है, यह घोषणा की। इसके साथ दूसरा- युक्ति और तर्क से भी मूर्ति पूजा को निरर्थक और पाखण्ड पूर्ण कृत्य है, यह सिद्ध किया।

महर्षि दयानन्द ने प्रचार क्षेत्र में उतरने के साथ ही मूर्तिपूजा पर प्रहार करना प्रारम्भ कर दिया। पण्डित लोग शास्त्रार्थ में पराजित हो जाते थे, बुद्धिमान् श्रोता स्वामी जी की युक्ति व प्रमाणों से सहमत होकर मूर्तिपूजा छोड़ने के लिए तैयार हो जाते थे, परन्तु पण्डे, पूजारी, मन्दिर, मठ के संचालकों की आजीविका पर यह सीधी चोट थी, इसलिए पण्डित लोग भागकर काशी पहुँचते थे और काशी के पण्डितों से मूर्ति पूजा के पक्ष में व्यवस्था लिखवा लाते थे। इसी कारण मूर्तिपूजा के गढ़ काशी को ही जीतने के लिए स्वामी दयानन्द ने काशी के पण्डितों को चुनौती दे डाली और यह चुनौती भी काशी नरेश के माध्यम से दी।

काशी शास्त्रार्थ का निश्चय काशी नरेश की आज्ञा अनुसार हुआ। वे शास्त्रार्थ में मध्यस्थ बने। मूर्तिपूजा के पक्ष-विपक्ष में जो कुछ इस शास्त्रार्थ में मिलता है, वह विषय से सम्बद्ध तो न्यून ही है, शास्त्रार्थ की दिशा भटकाने वाला अधिक है। इसकी चर्चा काशी शास्त्रार्थ की छपी पुस्तक की भूमिका देखने से स्पष्ट हो जाता है-

१. पाषाणादि मूर्ति पूजनादि में वैदिक प्रमाण होता तो क्यों न कहते?

२. स्व पक्ष को वैदिक प्रमाणों से सिद्ध किये बिना मनुस्मृति आदि को वेदानुकूल हैं या नहीं, इस प्रकरणान्तर में क्यों जा गिरते?

३. पुराण आदि शब्द ब्रह्म वैवर्त आदि ग्रन्थों से भी अपना पक्ष सिद्ध नहीं कर सके।

४. प्रतिमा शब्द से मूर्तिपूजा को सिद्ध करना चाहा, वह भी उनसे नहीं हो सका।

५. पुराण शब्द स्वामी जी विशेषण वाची मानते हैं, काशीस्थ पण्डित विशेष्य वाची, परन्तु पण्डित लोग अपना पक्ष सिद्ध नहीं कर सके।

(स्वामी दयानन्द, काशी शास्त्रार्थ, दयानन्द ग्रन्थमाला, भाग-३, पृ.-४५१-४५२)

स्वामी दयानन्द के मूर्ति पूजा विषयक विचारों को जानने के क्रम में काशी शास्त्रार्थ के पश्चात् स्वामी दयानन्द का एक और संस्कृत भाषा शास्त्रार्थ जो प्रतिमा पूजन विचार नाम से प्रथम बार सम्वत् १९३० में आर्य भाषा व बंगला भाषा में अनूदित होकर लाइट प्रेस बनारस से छपा था। यह कोलकाता के पास हुगली नामक स्थान में हुआ था। शास्त्रार्थ सम्वत् १९३० चैत्र शुक्ल एकादशी, मंगलवार तदनुसार ८ अप्रैल १८७३ के दिन हुआ था।

इस शास्त्रार्थ में प्रतिमा शब्द पर, पुराण शब्द पर तथा देवालय, देवपूजा शब्द पर विचार किया गया है। स्वामी दयानन्द कहते हैं- प्रतिमा प्रतिमानम्= जिससे प्रमाण अर्थात् परिमाण किया जाय, उसको कहते हैं जैसे पाव, आधा सेर आदि। इसके अतिरिक्त यज्ञ के चमसा आदि को भी प्रतिमा कहते हैं। इसके लिए स्वामी दयानन्द ने मनु का प्रमाण उद्धृत किया है-

तुलामानं प्रतिमानं सर्वं च स्यात् सुलक्षितम्।
षट्सु षट्सु च मासेषु पुनरेव परीक्षयेत्।।

- मनु ८/४०३

स्वामी दयानन्द पुराणों को अमान्य करते हैं। पुराणों में मूर्ति पूजा का विस्तार से वर्णन है, जिन्हें आजकल की भाषा में शिव, ब्रह्म वैवर्त, भागवत आदि कहते हैं, परन्तु स्वामी दयानन्द पुराण को शब्दार्थ के रूप में पुराना अथवा पुस्तक के रूप में शतपथ आदि ब्राह्मण ग्रन्थों के नाम पुराण स्वीकार करते हैं।

शेष भाग अगले अंक में.....

- डॉ. धर्मवीर

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

ईश्वर सुकृत कैसे:- श्री सुधाकर आर्य कोशाम्बी गाजियाबाद की दोनों नन्हीं-नन्हीं पुत्रियाँ बहुत कुशाग्र बुद्धि हैं। कभी-कभी ऐसे प्रश्न पूछ लेती हैं कि उनके दादा डॉ. अशोक आर्य सोच में पड़ जाते हैं कि इतनी छोटी-सी आयु की बालिकाओं को कैसे समझाऊँ। बच्चे के स्तर पर उत्तर देना प्रत्येक व्यक्ति के बस की बात नहीं है। एक आर्य बालक ने अपने स्वाध्यायशील पिता से पूछ लिया, वायु क्यों और कैसे चलती है? पिता के लिये समस्या खड़ी हो गई कि इसे क्या उत्तर दूँ?

डॉ. अशोक जी की चार वर्षीय पौत्री ने घर के बड़ों से पूछा, हम सबके घर में काले बाल हैं, दादा जी के काले क्यों नहीं हैं? उनकी दूसरी पोत्री से सन्ध्या के पश्चात् प्रश्न उठाया, मैं आप सबको देखती हूँ, परन्तु भगवान् दिखाई क्यों नहीं देता। मुझे उन्हें सन्तुष्ट करने को कहा गया। मैंने छोटी बालिका से कहा, तुम पहले से बड़ी हो गई हो। हम सबमें व्यापक ईश्वर हमारे शरीरों का परिवर्तन व वृद्धि करता रहता है। जवानी ढलती है, तो शरीर शिथिल हो जाता है। काले बाल श्वेत हो जाते हैं। वह प्रभु सुकृत सुन्दर और विचित्र कला वाला कलाकार या कारीगर है।

कहीं यह प्रसंग सुना रहा था तो किसी को सुकृत शब्द तो बहुत भाया, परन्तु इसे और स्पष्ट करने को कहा। साथ ही एक नया प्रश्न जोड़ दिया सूअर जैसे गन्दे प्राणी तथा सर्प जैसी योनि को बनाने वाले को वेद 'सुकृत' कहता है। हम उसे सुकृत कैसे मान लें?

उसे उत्तर दिया, देखो! हमारे बच्चों की आयु बढ़ती है तो पहले वाले मूल्यवान् वस्त्र कोट, स्वैटर आदि काम नहीं आते। वे ठीक होने पर भी बच्चों के काम नहीं आते। हमें बहुत व्यय करके नये मूल्यवान् वस्त्र सिलवाने पड़ते हैं, परन्तु मानव चोला वही का वही काम करता है। छोटा, कोट तो बड़ा नहीं बन सकता, परन्तु प्रभु हमारे पैरों, टाँगों, भुजाओं, हाथों व मुख आदि सब अंगों को बिना कतरणी चलाये बढ़ाता जाता है। क्या कोई मानवीय कारीगर ऐसा कर सकता है? उस प्रश्न कर्त्ता तथा सब श्रोताओं का मेरे द्वारा दिया गया उत्तर बहुत जँचा। वे मुग्ध हो गये। अब उन्हें समझ में आ गया कि वेद ने ईश्वर को सुकृत क्यों कहा है।

रही बात सूअर आदि योनियों को क्यों बनाया? सो उन्हें बताया कि जिसने सूअर जैसा आपको गन्दा दिखने वाला जन्तु पैदा किया है। मोर व तोते जैसे सुन्दर प्राणी पक्षी भी उसी ने बनाये हैं। सुन्दर दर्शनीय नगरों में जहाँ स्कूल, कॉलेज, हस्पताल बनाये जाते हैं, वहीं कारागार व फाँसी का फँदा भी होता है। ये भी जीवों के कल्याणार्थ आवश्यक हैं।

काशी शास्त्रार्थ में वेद:- 'परोपकारी' के एक पिछले अंक में महर्षि दयानन्द जी द्वारा जर्मनी से वेद संहितायें मँगवाने विषयक आचार्य सोमदेव जी को व इस लेखक को प्राप्त प्रश्नों का उत्तर दिया गया था। कहीं इसी प्रश्न की चर्चा फिर छिड़ी तो उन्हें बताया गया कि सन् १८६९ के काशी शास्त्रार्थ में ऋषि जी ने महाराजा से माँग की थी कि शास्त्रार्थ में **चारों वेद आदि शास्त्र भी लाये जायें** ताकि प्रमाणों का निर्णय हो जाये। इससे प्रमाणित होता है कि वेद संहितायें उस समय भारत में उपलब्ध थीं। पाण्डुलिपियाँ भी पुराने ब्राह्मण घरों में मिलती थीं।

परोपकारी में ही हम बता चुके हैं कि आर्यसमाज स्थापना से बहुत पहले पश्चिमी देशों में पत्र-पत्रिकाओं में छपता रहा कि यह संन्यासी दयानन्द ललकार रहा है, कि लाओ वेद से प्रतिमा पूजन का प्रमाण, परन्तु कोई भी वेद से मूर्तिपूजा का प्रमाण नहीं दे सका। ऋषि यात्राओं में वेद रखते ही थे। हरिद्वार के कुम्भ मेले में ऋषि यात्राओं में वेद रखते ही थे। हरिद्वार के कुम्भ मेले में ऋषि विरोधी पण्डित भी कहीं से वेद ले आये। लाहौर में श्रद्धाराम चारों वेद ले आये। वेद कथा भी उसने की। ऐसे अनेक प्रमाणों से सिद्ध है कि जर्मनी से वेद मँगवाने की बात गढ़न्त है या किसी भावुक हृदय की कल्पना मात्र है। देशभर में ऐसे वेद पाठियों की संख्या तब सहस्रों तक थी जिन्हें एक-एक दो-दो और कुछ को चारों वेद कण्ठाग्र थे। सेठ प्रताप भाई

के आग्रह पर कोई ६३-६४ वर्ष पूर्व एक बड़े यज्ञ में एक ऐसा वेदापाठी भी आया था, जिसे चारों वेद कण्ठाग्र थे। तब पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज भी उस यज्ञ में पधारे थे। आशा है कि पाठक इन तथ्यों का लाभ उठाकर कल्पित कहानियों का निराकरण करेंगे।

बाइबिल के कुछ और संस्करण खोज लिये :- श्री सत्येन्द्र सिंह जी ने मार्च (प्रथम) के अपने लेख में सत्यार्थप्रकाश में उद्धृत आयतों वाले बाइबिल के संस्करण की प्राप्ति का आनन्ददायक समाचार दे दिया है। जो संस्करण राजवीर जी को मिला है, वह महर्षि के बलिदान के पश्चात् प्रयाग से निकला था, परन्तु है वही। आर्यजन यह पढ़कर गौरवान्वित होंगे कि जिस संस्करण से महर्षि ने लाभ उठाया, हमें वह भी प्राप्त हो चुका है। इसके साथ और भी कई संस्करण सभा के पास पहुँच चुके हैं।

अब सभा मन्त्री जी, श्री अनिल आर्य तथा उनके सब मित्रों की यह इच्छा है कि 'कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक' जैसा ही 'बाइबिल सत्यार्थप्रकाश के आलोक में' एक ठोस ग्रन्थ शीघ्र तैयार करने में जुट जाऊँ। मैंने सभा मन्त्री जी तथा पं. लेखराम की सेना का आदेश शिरोधार्य करने का सङ्कल्प कर लिया। आयु के ८५ वर्ष पूरे होने वाले हैं। ईश्वर मुझसे अभी कई बड़े-बड़े कार्य करवाना चाहता है। मुझे पक्का विश्वास है और आशा है कि पं. लेखराम के लहू की धार अपना चमत्कार दिखायेगी। मैं जानता हूँ:-

'जीवन क्षण-क्षण बीता जाये'

यह परमेश्वर की वेदवाणी की रक्षा का कार्य है अवश्य सिरे चढ़ेगा।

दूर दक्षिण से एक प्रस्ताव :- दूर दक्षिण से ऋषि मिशन के दीवाने युवकों ने, लेखराम मिशन के आर्यवीरों ने देश धर्म हित फाँसी के फँदे तक पहुँचे, तीन क्रान्तिकारी आर्यों के वंशजों से मेरी बात करवाई है। वे दक्षिण के आर्यसमाज विषयक एक ग्रन्थ मुझसे लिखवाना चाहते हैं। मैं अब किसी के कहने पर या सुझाव पर कुछ नहीं करता। कार्य बहुत हैं, परन्तु जो कुछ कर रहा हूँ और जो कुछ करूँगा, परोपकारिणी सभा तथा अनिल जी, यशवन्त जी की मण्डली के कहने पर ही किये जाऊँगा। निरन्तर सब परियोजनाओं पर कार्य हो रहा है। किसी ने दक्षिण की इस परियोजना के लिये आर्थिक सहयोग का प्रस्ताव किया। मैंने किसी कारण से अस्वीकार कर दिया। धन पर न कभी मरा हूँ और न मरूँगा। पारिश्रमिक से, भाड़े पर कार्य करने वाला अर्थार्थी लेखक नहीं हूँ। वीर लेखराम का सैनिक हूँ। अब कुछ क्रान्तिवीरों के वंशजों ने अर्थ-व्यवस्था की है। मैंने कहा, अभी राशि अपने पास रखें। यह कार्य हो जायेगा। महाबलिदानी स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज से शोध की, लेखनी चलाने की जो दीक्षा ली थी, उसका इस सेवक को प्रतिपल ध्यान है। वीर वेदप्रकाश से लेकर पं. नरेन्द्रजी तथा काशीनाथ, गोविन्दराव व माता गोदावरी तक के रक्तरंजित इतिहास की रक्षा करके लौहपुरुष स्वतन्त्रानन्द महाराज का तर्पण किया जायेगा।

मैं इनका ऋणी हूँ :- ऋषि के जीवनकाल में चाँदापुर शास्त्रार्थ पर उसी समय उर्दू में एक पुस्तक छपी थी। तब तक ऋषि जीवन पर बड़े-बड़े ग्रन्थ नहीं छपे थे, जब पं. लेखराम जी ने अपने एक ग्रन्थ में उक्त पुस्तक के आधार पर यह लिखा कि शास्त्रार्थ के आरम्भ होने से पूर्व मुसलमानों ने ऋषि से कहा था कि हिन्दू व मुसलमान मिलकर ईसाइयों से शास्त्रार्थ करें। ऋषि ने यह सुझाव अस्वीकार कर दिया। जब मैंने ऋषि जीवन पर कार्य किया, इतिहास प्रदूषण पुस्तक में यह घटना दी तब यह प्रमाण भी मेरे ध्यान में था।

मुसलमान लीडरों डॉ. इकबाल, सर सैयद अहमद खाँ, मौलवी सना उल्ला व कादियानी नबी ने पं. लेखराम का सारा साहित्य पढ़ा। पण्डित जी के साहित्य पर कई केस चलाये गये। पाकिस्तान में आज भी पण्डित जी के साहित्य की चर्चा है। किसी ने भी इस घटना को नहीं झुठलाया, परन्तु जब मैंने यह प्रसंग लिखा तो **वैदिक पथ** हिण्डौन सिटी व **दयानन्द सन्देश** आदि पत्रों में चाँदापुर शास्त्रार्थ पर लेख पर लेख छपे। मेरा नाम ले लेकर मेरे कथन को 'इतिहास प्रदूषण' बताया गया। मैंने पं. लेखराम की दुहाई दी। देहलवी जी, ठा. अमरसिंह, महाशय चिरञ्जीलाल प्रेम के नाम की दुहाई तक देनी पड़ी। किसी पत्र के सम्पादक व मालिक ने तो मेरे इतिहास का ध्यान न किया, न इन गुणियों पूज्य पुरुषों की लाज रखी। **थोथा**

चना बाजे घना। मैंने प्राणवीर पं. लेखराम का सन्मान बचाने के लिये उनके ग्रन्थ के उस पृष्ठ की प्रतिछाया वितरित कर दी। पं. लेखराम जी पर कोर्टों के निर्णय आदि पेश कर दिये। लेख देने वाले को तो मुझे कुछ नहीं कहना। इन पत्रों के स्वामियों व सम्पादकों का मैं आभार मानता हूँ। मैं इनका ऋणी हूँ। यह वही लोग हैं जो नन्हीं वेश्या पर लेख प्रकाशित करके उसे चरित्र की पावनता का प्रमाण-पत्र दे रहे थे। इनका बहुत-बहुत धन्यवाद। इन पत्रों के स्वामी पं. लेखराम जी के ज्ञान की थाह क्या जानें।

विषदाता कह पत्थर मारे। क्या जाने किस्मत के मारे।।
सुधा कलश ले आया। उस जोगी का भेद न पाया।।

हाँ! मुझे इस बात पर आश्चर्य है कि वैदिक पथ पर श्री ज्वलन्त जी का सम्पादक के रूप में नाम छपता है। आप ने ऐसी गम्भीर बात पर चुप्पी साध ली। मुझ से बात तक न की। **मेरा उनसे एक नाता है, उस नाते से उनका मौन अखरा और किसी से कोई शिकायत नहीं।** जी भर कर मुझे कोई कोसे। अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का लाभ उठाना चाहिये। कन्हैया, केजरीवाल व राहुल ने सबकी राहें खोल दी हैं।

'फूँकों से यह चिराग बुझाया न जायेगा'

तड़प-झड़प ग्रन्थमाला:- नेपाल की सीमा से सटे क्षेत्र से एक विद्वान् ने लिखा है कि परोपकारी में प्रकाशित 'कुछ तड़प-कुछ झड़प' लेखमाला को ग्रन्थमाला के रूप में प्रकाशित करने में विलम्ब न कीजिये। पहले भी श्री सत्यपाल सिंह आदि आर्यों का ऐसा अनुरोध रहा। अब मैंने एक साहित्य प्रेमी को कह दिया है कि वह २५-३० तक अंकों को संग्रहित करके मुझे भेजता रहा। मैं मुद्रण दोष दूर करके पठनीय प्राक्कथन के साथ जिसे प्रकाशनार्थ देना है, देता जाऊँगा। परोपकारी के प्रेमियों सब ऋषि भक्तों के इस स्नेह व मूल्याङ्कन के लिये हृदय से आभार मानता हूँ।

कासगंज समाज का ऋणी हूँ :- आर्यसमाज के एक ऐतिहासिक व श्रेष्ठ पत्र 'आर्य समाचार' उर्दू मासिक मेरठ का कोई एक अंक शोध की चिन्ता में घुलने वाले किसी व्यक्ति ने कभी देखा नहीं। इसके बिना कोई भी आर्यसमाज के साहित्य व इतिहास से क्या न्याय करेगा? श्रीराम शर्मा से टक्कर लेते समय मैं घूम-घूम कर इसका सबसे महत्त्वपूर्ण अंक कहीं से खोज लाया। कुछ और भी अंक कहीं से मिल गये। तबसे स्वत: प्रेरणा से इसकी फाईलों की खोज में दूरस्थ नगरों, ग्रामों व कस्बों में गया। कुछ-कुछ सफलता मिलती गई। श्री यशपाल जी, श्री सत्येन्द्र सिंह जी व बुढाना द्वार, आर्य समाज मेरठ के समाज के मन्त्री जी की कृपा व सूझ से कई अंक पाकर मैं तृप्त हो गया। इनका भरपूर लाभ आर्यसमाज को मिल रहा है। अब कासगंज के ऐतिहासिक समाज ने श्री यशवन्तजी, अनिल आर्य जी, श्री लक्ष्मण जी और राहुलजी के पं. लेखराम वैदिक मिशन से सहयोग कर आर्य समाचार की एक बहुत महत्त्वपूर्ण फाईल सौंपकर चलभाष पर मुझ से बातचीत भी की है। वहाँ के आर्यों ने कहा है, हम आपके ऋणी हैं। आपने हमारे बड़ों की ज्ञान राशि की सुरक्षा करके इसे चिरजीवी बना दिया। इससे हम धन्य-धन्य हो गये। आर्य समाचार एक मासिक ही नहीं था। यह वीरवर लेखराम का वीर योद्धा था। पं. घासीराम जी की कोटि का आर्य नेता व विचारक इसका सम्पादक रहा। इसमें महर्षि के अन्तिम एक मास की घटनाओं की प्रामाणिक सामग्री पं. लेखराम जी द्वारा सबको प्राप्त हुई। वह अंक तो फिर प्रभु कृपा से मुझे ही मिला। उसी के दो महत्त्वपूर्ण पृष्ठों को स्कैनिंग करवाकर परोपकारिणी सभा को सौंपे हैं।

पं. रामचन्द्र जी देहलवी तथा पं. नरेन्द्र जी के जन्मदिवस पर इन अंकों पर एक विशेष कार्य आरम्भ हो जायेगा। इसके प्रकाशन की व्यवस्था यही मेधावी युवक करेंगे।

दिल्ली से प्रकाशित एक विकृत ऋषि-जीवन :- श्रीयुत् दिलीप वेलाणी ने दर्शनयोग विद्यालय, रोजड़ से दिल्ली से प्रकाशित एक विकृत ऋषि-जीवन भिजवाया है। हमारे दिल्ली के नेता, सभायें सब सोई पड़ी हैं। सम्मेलन हो रहे हैं। फोटो खिंच रहे हैं। इस घातक वार-प्रहार का उत्तर परोपकारिणी सभा देगी। अगले किसी अंक में इसकी शव परीक्षा होगी। देखें तो प्रकाशक क्या कहता है। निराकरण हम करेंगे ही।

जी हाँ देखे हैं, दिखा दूँगा :- एक प्रबुद्ध पाठक ने चलभाष पर कहा, परोपकारी में पहली बार पढ़ा कि 'आर्य दर्पण' त्रिभाषी भी रहा। क्या कोई ऐसा अंक आप हमें भी

दिखा देंगे? मैंने उन्हें कहा, आप कभी आ जाना, मैं दिखा दूँगा। मैं 'इतिहास प्रदूषण महामण्डल' के लिए हदीसें नहीं गढ़ता रहता। यदि हो सका तो किसी अवसर पर ऐसे त्रिभाषी अंक के एक पृष्ठ की छाया प्रति परोपकारी को प्रकाशनार्थ भेज दूँगा।

ये प्रेरक प्रसंग, यह किया और यह दिया :- मार्च २०१६ के वेदप्रकाश के अंक में श्री भावेश मेरजा ने मेरी दो पुस्तकों के आधार पर देशहित में स्वराज्य संग्राम में आर्यसमाज के बलिदानियों को शौर्य की १९ घटनायें या बिन्दु दिये हैं। किन्हीं दो आर्यवीरों ने ऐसी और सामग्री देने का अनुरोध किया है। आज बहुत संक्षेप से आर्यों के साहस शौर्य की पाँच और विलक्षण घटनायें यहाँ दी जाती हैं।

१. देश के स्वराज्य संग्राम में केवल एक संन्यासी को फाँसी दण्ड सुनाया गया। वे थे महाविद्वान् स्वामी अनुभवानन्दजी महाराज। जन आन्दोलन व जन रोष के कारण फाँसी दण्ड कारागार में बदल दिया गया।

२. हैदराबाद राज्य के मुक्ति संग्राम में सबसे पहले निजामशाही ने पं. नरेन्द्र जी को कारागार में डाला अन्य नेता बाद में बन्दी बनाये गये।

३. निजाम राज्य में केवल एक क्रान्तिवीर को मनानूर के कालेपानी में एक विशेष पिंजरे में निर्वासित करके बन्दी बनाया गया।

४. स्वराज्य संग्राम में केवल एक राष्ट्रीय नेता को पिंजरे में गोराशाही ने बन्दी बनाया। वे थे हमारे पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी।

५. जब वीर भगतसिंह व उनके साथियों ने भूख हड़ताल करके अपनी माँगें रखीं तब उनके समर्थन में एक विराट् सभा की। अध्यक्षता के लिए एक बेजोड़ निर्भीक सेनानी की देश को आवश्यकता पड़ी। राष्ट्रवासियों की दृष्टि हमारे भीमकाय संन्यासी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी पर पड़ी। सरकार उनके उस ऐतिहासिक भाषण से हिल गई। आर्य समाज के पूजनीय नेता के उस अध्यक्षीय भाषण को क्रान्तिघोष मान कर सरकार ने केहरी को (स्वामी जी का पूर्व नाम केहर सिंह-सिंहों का सिंह था) कारागार में डाल दिया। आज देशवासी और आर्यसमाज भी यह इतिहास-गौरव गाथा भूल गया।

पाठक चाहेंगे तो ऐसी और सामग्री अगले अंकों में दी जायेगी। मेरे पश्चात् फिर कोई यह इतिहास बताने, सुनाने व लिखने वाला दिख नहीं रहा। श्री धर्मेन्द्र जिज्ञासु इस कार्य को करने में समर्थ हैं यदि.....

भीष्म स्वामी जी धीरता, वीरता व मौन :- इस बार केवल एक ही प्रेरक प्रसंग दिया जाता है। नरवाना के पुराने समर्पित आर्य समाजी और मेरे विद्यार्थी श्री धर्मपाल तीन-चार वर्ष पहले मुझे गाड़ी पर चढ़ाने स्टेशन पर आये तो वहाँ कहा कि सन् १९६० में कलायत कस्बा में आर्यसमाज के उत्सव में श्री स्वामी भीष्म जी कार्यक्रम में कूदकर गड़बड़ करने वाले साधु से आपने जो टक्कर ली वह प्रसंग पूरा सुनाओ। मैंने कहा, आपको भीष्म जी की उस घटना की जानकारी कहाँ से मिली? उसने कहा, मैं भी तब वहाँ गया था।

संक्षेप से वह घटना ऐसे घटी। कलायत में आर्यसमाज तो था नहीं। आस-पास के ग्रामों से भारी संख्या में लोग आये। स्वामी भीष्म जी को मन्त्र मुग्ध होकर ग्रामीण श्रोता सुनते थे। वक्ता केवल एक ही था युवा राजेन्द्र जिज्ञासु। स्वामी जी के भजनों व दहाड़ को श्रोता सुन रहे थे। एकदम एक गौरवर्ण युवा लंगडा साधु जिसके वस्त्र रेशमी थे वेदी के पास आया। अपने हाथ में माईक लेकर अनाप-शनाप बोलने लगा। ऋषि के बारे में भद्दे वचन कहे। न जाने स्वामी भीष्म जी ने उसे क्यों कुछ नहीं कहा। उनकी शान्ति देखकर सब दंग थे। दयालु तो थे ही। एक झटका देते तो सूखा सड़ा साधु वहीं गिर जाता।

मुझसे रहा न गया। मैं पीछे से भीड़ चीरकर वेदी पर पहुँचा। उस बाबा से माईक छीना। मुझसे अपने लोक कवि संन्यासी भीष्म स्वामी जी का निरादर न सहा गया। उसकी भद्दी बातों व ऋषि-निन्दा का समुचित उत्तर दिया। वह नीचे उतरा। स्वामी भीष्म जी ने उसे एक भी शब्द न कहा। उस दिन उनकी सहनशीलता बस देखे ही बनती थी। श्रोता उनकी मीठी तीन सुनने लगे। वह मीठी तान आज भी कानों में गूञ्ज रही हैं :-

तज करके घरबार को, माता-पिता के प्यार को,
करने परोपकार को, वे भस्म रमा कर चल दिये.....

वे बाबा अपने अंधविश्वासी, चेले को लेकर अपने डेरे को चल दिया। मैं भी उसे खरी-खरी सुनाता साथ हो लिया। जोश में यह भी चिन्ता थी कि यह मुझ पर वार-प्रहार करवा सकता था। धर्मपाल जी मेरे पीछे-पीछे वहाँ तक पहुँचे, यह उन्हीं से पता चला। मृतकों में जीवन संचार करने वाले भीष्म जी के दया भाव को तो मैं जानता था, उनकी सहन शक्ति का चमत्कार तो हमने उस दिन कलायत में ही देखा। धर्मपाल जी ने उसकी याद ताजा कर दी।

दिल्ली से प्रकाशित निन्दनीय ऋषि-जीवन :- दिल्ली में आर्यसमाज के अनेक नेता हैं। नये-नये शास्त्रार्थ महारथी भी हैं। इनकी सबकी नाक के नीचे एक घटिया दूषित, विकृत ऋषि जीवन छपा है। दर्शन योग विद्यालय से श्री दिलीप वेलाणी जी ने मेरे पास भेजा है। इसमें क्या है? यह अगले अंकों में बताया जायेगा। प्रतापसिंह और नन्हीं वेश्या का तो उल्लेख तक नहीं। अली मर्दान को सुप्रसिद्ध डॉक्टर लिखा गया है। महाराणा सज्जन सिंह जी को जोधपुर लाया गया है। पं. गुरुदत्त, ला. जीवन दास की चर्चा नहीं। श्री सैयद मुहम्मद तहसीलदार का नाम तक अशुद्ध है। कई संवाद इसमें कल्पित हैं। घटनायें प्रदूषित, मनगढ़न्त और विकृत हैं। इतिहास प्रदूषण की अद्‌भूत शैली है। लेखक ने बड़ी कुशलता से अपनी कुटिलता दिखाई है। परोपकारिणी सभा प्रत्येक वार-प्रहार का उत्तर देने के लिये है। सभा मन्त्री जी ने मेरे सुझाव पर अगली पीढ़ी को मैदान में उतारा है। प्रकाशक वह भूल सुधार कर दे तो ठीक नहीं तो फिर हम अगला पग उठायेंगे। जहाँ मेरी आवश्यकता होगी, मैं मोर्चा सम्भालूँगा:-

जरा छेड़े से मिलते हैं मिसाले ताले तम्बूरा
मिला ले जिसका जी चाहे बजा ले जिसका जी चाहे

अच्छा होता यदि दिल्ली के नेता व सभायें जागरूक होतीं।

हटावट के नये उदाहरण :- 'इतिहास प्रदूषण' पुस्तक पढ़कर प्रदूषण के नये प्रकार हटावट के और ठोस उदाहरण इस सेवक से माँगे जा रहे हैं। मैं कितने उदाहरण दूँ? अजमेर में मनाई गई **सन् १९३३ की अर्धशताब्दी का वृत्तान्त आप पढ़ें। इसके पृष्ठ ७४ पर पं. विश्वबंधु शास्त्री के और स्वामी सत्यानन्दजी के विरुद्ध प्रस्तावों को आप पढ़ें। परोपकारिणी सभा के इतिहास से इनको निकाल दिया गया। हटावट का यह पाप किसने किया?** उसमें विश्वबंधु की करतूतों का उल्लेख मिलेगा। पं. भगवद्दत्त जी ने ऋषि के पत्र-व्यवहार में बहुत कुछ लिख दिया है। इस सामग्री का सीधा सम्बन्ध परोपकारिणी सभा से है। हटावट की तीखी छुरी चलाकर इतिहास प्रदूषित किया गया है। इसका प्रयोजन? पं. भगवद्दत्त जी को अपमानित करने व करवाने वाले को महिमा मण्डित करने का घृणित पाप तो चलो कर दिया, परन्तु पं. भगवद्दत्त जी से दुर्व्यवहार की हटावट का कारण? हटावट वालों का अपना ही मिशन है। ऋषि के मिशन से इन्हें क्या लेना?

पं. श्रद्धाराम फिलौरी विषयक गम्भीर प्रश्न :- परोपकारी के एक इतिहास प्रेमी ने लखनऊ से प्रश्न पूछा है कि पं. श्रद्धाराम फिलौरी का ऋषि के नाम पत्र पढ़कर हम गद्‌गद् हैं, परन्तु पं. श्रद्धाराम ने ऋषि के विरुद्ध कोई पुस्तक व ट्रैक्ट तक नहीं लिखा, आपका यह कथन पढ़कर हम दंग रह गये। इसकी पुष्टि में कोई ठोस प्रमाण हमें दीजिये। प्रश्न बहुत गम्भीर व महत्त्वपूर्ण है। ऋषि की निन्दा करने वालों को मेरे कथन का प्रतिवाद करना चाहिये था। तथापि मेरा निवेदन है कि श्रद्धाराम जी के साहित्य की सूची कोई-सी देखिये। इन सूचियों में श्री कन्हैयालाल जी अलखधारी व श्री नवीन चन्द्रराय के विरुद्ध एक भी पृष्ठ नहीं लिखा गया। किसी को ऐसी कोई सूची न मिले तो फिर हमारे पास आयें। जो इसका प्रमाण माँगेंगे ठोस प्रमाण दे देंगे। सूचियाँ दिखा देंगे। हम हदीसें गढ़ने वाले नहीं हैं। इतिहास प्रदूषण को पाप मानते हैं। जिस विषय का ज्ञान न हो उसमें टाँग नहीं अड़ाते।

- वेद सदन, अबोहर-१५२११६

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य उत्तम शिक्षा विद्या शरीर और आत्मा का बल आरोग्य पुरुषार्थ ऐश्वर्य सज्जनों का संग आलस्य का त्याग यम-नियम और उत्तम सहाय के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१**

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : १२ से १९ जून, २०१६

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

ईश्वर की सिद्धि में प्रत्यक्षादि प्रमाण सिद्ध नहीं हैं

(सत्यार्थ प्रकाश द्वादश समुल्लास के आधार पर खण्डन)

- ब्र. राजेन्द्रार्य

पिछले अंक का शेष भाग.....

निराकार होते हुए कैसे कार्य करता है - प्रश्नः जब परमेश्वर के श्रोत्र-नेत्रादि इन्द्रियाँ नहीं हैं, फिर वह इन्द्रियों का काम कैसे कर सकता है?

उत्तरः स्वामी दयानन्द उपनिषद् का वचन उद्धृत करते हुए लिखते हैं-

अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः।
स वेत्ति विश्वं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्रथं पुरुषं महान्तम्।।

- श्वेताश्वतरोपनिषद् अ. ३/मं. १९

परमेश्वर के हाथ नहीं, परन्तु अपनी शक्तिरूप हाथ से सबका रचन, ग्रहण करता, पग नहीं परन्तु व्यापक होने से सबसे अधिक वेगवान्, चक्षु का गोलक नहीं परन्तु सबको यथावत् देखता, श्रोत्र नहीं तथापि सबकी बातें सुनता, अन्तःकरण नहीं, परन्तु सब जगत् को जानता है और उसको अवधि सहित जानने वाला कोई भी नहीं। उसी को सनातन, सबसे श्रेष्ठ, सब में पूर्ण होने से पुरुष कहते हैं। वह इन्द्रियों और अन्तःकरण के बिना अपने सब काम अपने सामर्थ्य से करता है।[१७]

ईश्वर निष्क्रिय और निर्गुण नहीं - प्रश्नः उसको बहुत से मनुष्य निष्क्रिय और निर्गुण कहते हैं।

उत्तर :

न तस्यकार्य्यं करणं च विद्यते न तत्समश्चाभ्यधिकश्चदृश्यते।
परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च।।

- श्वेताश्वतरोपनिषद् अ. ६/ मं. ८

परमात्मा से कोई तद्रूप कार्य और उसको करण अर्थात् साधकतम दूसरा अपेक्षित नहीं। न कोई उसके तुल्य और अधिक है। सर्वोत्तम शक्ति अर्थात् उसमें अनन्त ज्ञान, अनन्त बल और अनन्त क्रिया है वह स्वाभाविक अर्थात् सहज उसमें सुनी जाती है। जो परमेश्वर निष्क्रिय होता तो जगत् की उत्पत्ति-स्थिति-प्रलय न कर सकता। इसलिये वह विभु तथापि चेतन होने से उसमें क्रिया भी है।[१८]

निष्क्रिय हो तो जगत् को कैसे बनावे - देखो, जैसे वर्तमान् समय में जीव पाप-पुण्य करता, सुख-दुःख भोगता है, वैसे ईश्वर कभी नहीं होता। जो ईश्वर क्रियावान न होता, तो जगत् को कैसे बना सकता? जैसा कि कर्मों को प्राग भाववत् अनादि सान्त मानते हो, तो कर्म समवाय सम्बन्ध से नहीं रहेगा। जो समवाय सम्बन्ध से नहीं, वह संयोगज हो के अनित्य होता है।

- सत्यार्थप्रकाशः, द्वादश समुल्लासः

सृष्टि का उत्पादक - नास्तिकः जब परमात्मा शाश्वत अनादि चिदानन्द ज्ञानस्वरूप है, तो जगत् के प्रपञ्च और दुःख में क्यों पड़ा? आनन्द छोड़ दुःख का ग्रहण ऐसा काम कोई साधारण मनुष्य भी नहीं करता, (फिर) ईश्वर ने क्यों किया?

आस्तिकः परमात्मा किसी प्रपञ्च और दुःख में नहीं गिरता, न अपने आनन्द को छोड़ता है, क्योंकि प्रपञ्च और दुःख में गिरना, जो एकदेशी हो उसका हो सकता है, सर्वदेशी का नहीं। जो अनादि चिदानन्द ज्ञानस्वरूप परमात्मा जगत को न बनावे, तो अन्य कौन बना सके? जगत् बनाने का सामर्थ्य जीव में नहीं, और जड़ में स्वयं बनने का सामर्थ्य नहीं। इससे यह सिद्ध हुआ कि परमात्मा ही जगत् को बनाता और सदा आनन्द में रहता है। जैसे परमात्मा परमाणुओं से सृष्टि करता है, वैसे माता-पिता रूप निमित्त कारण से भी उत्पत्ति का प्रबन्ध नियम उसी ने किया है।[२०]

वेदादि शास्त्रों में अनेकत्र सृष्टि को उत्पन्न करने वाले चेतन तत्त्व ब्रह्म का प्रतिपादन किया है। यह विविध सृष्टि जिससे उत्पन्न होती है जिसके द्वारा धारण की जाती है और अन्त में जब यह नहीं रहती, अपने कारण रूप में लीन हो जाती है, इस सबका जो अध्यक्ष-नियन्ता सर्वव्यापक परमेश्वर वही इसकी वास्तविकता को जानता है।[२१] यह प्राणी-अप्राणी रूप जगत् जिससे उत्पन्न होता, उत्पन्न होकर जिसके आश्रय जीता और जिसके द्वारा अन्त में लीन होता, उसको जानने की इच्छा करो वह ब्रह्म है।[२२]

संभवतः वेद और उपनिषद् के इसी अभिप्राय को महर्षि वेद व्यास ने- **जन्माद्यस्य यतः।** वेदान्त दर्शन १/१/२ के रूप में सूत्रबद्ध किया है। यहाँ यह स्पष्ट है कि जिसकी उत्पत्ति होती है, वह जगत् है और जो उससे भिन्न है, वह उसकी उत्पत्ति में निमित्त कारण है।[२३]

आचार्य कपिल ने भी कहा है-

सहि सर्ववित् सर्वकर्त्ता। - सांख्य दर्शन ३/५६

ईश्वर ही सर्वज्ञ सृष्टिकर्त्ता है, सर्वशक्तिमान् = जो सृष्टि रचना में किसी अन्य की शक्ति उधार नहीं लेता, न इन्द्रियादि साधनों की अधीनता रखता है, अपितु ''सर्वशक्तिमत्ता'' से आभ्यन्तरीय (भीतर से) इक्षणशक्ति द्वारा समस्त विश्व-ब्रह्माण्ड की अद्‌भुत रचना करता है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाशः अष्टम समुल्लास में लिखते हैं-

देखो! शरीर में किस प्रकार की ज्ञानपूर्वक सृष्टि रची है जिसको विद्वान् लोग देखकर आश्चर्य मानते हैं। भीतर हाड़ों के जोड़, नाड़ियों का बन्धन, मांस का लेपन, चमड़ी का ढक्कन, प्लीहा, यकृत, फेफड़ा, पंखा, कला का स्थापन, रुधिर शोधन, प्रचालन, विद्युत का स्थापन, जीव का संयोजन, शिरोरूप मूलरचन, लोम नखादि का स्थापन, आँख की अतीव सूक्ष्म शिरा का तारवत् ग्रन्थन, इन्द्रियों के मार्गों का प्रकाशन, जीव के जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्था के भोगने के लिये स्थान विशेषों का निर्माण, सब धातु का विभाग करण, कला, कौशल स्थापनादि अद्‌भुत् सृष्टि को बिना परमेश्वर के कौन कर सकता है?[२४]

समस्त वैज्ञानिक ईश्वर को सृष्टिकर्त्ता, सुव्यवस्थापक नहीं मानते, यह कहना भी असत्य है। सर ऑलिवर लाज और आईंस्टीन महोदय का कथन है-

I believe in God---Who reveals himself in orderly harmony of the universe.

अर्थात् मैं ऐसे ईश्वर में विश्वास करता हूँ जो अपने आपको सांसारिक सुव्यवस्था के रूप में प्रकट करता है।[२५]

कर्मफल दाता- ईश्वरीय व्यवस्था से ही जीव कर्मफलों को भोगते हैं। प्रकरण रत्नाकर के दूसरे भाग आस्तिक-नास्तिक के संवाद के प्रश्नोत्तर के अन्तर्गत इस सिद्धान्त की पुष्टि की गई है, जिसको बड़े-बड़े जैनियों ने अपनी सम्मति के साथ माना और मुम्बई में छपवाया है।

नास्तिकः ईश्वर की इच्छा से कुछ नही होता जो कुछ होता है, वह कर्म से।

आस्तिकः जो सब कर्म से होता है तो कर्म किससे होता है? जो कहो जीव आदि से होता है तो जिन श्रोत्रादि साधनों से कर्म जीव करता है, वे किन से हुए? जो कहो कि अनादिकाल और स्वभाव से होते हैं तो अनादि का छूटना असम्भव होकर तुम्हारे मत में मुक्ति का अभाव होगा। जो कहो कि प्रागभाववत् अनादि सान्त हैं तो बिना यत्न के सब कर्म निवृत्त हो जायेंगे । यदि ईश्वर फलदाता न हो तो पाप के फल दुःख को जीव अपनी इच्छा से कभी नहीं भोगेगा। जैसे चोर आदि चोरी का फल दण्ड अपनी इच्छा से नहीं भोगते, किन्तु राज्य व्यवस्था से भोगते हैं, वैसे ही परमेश्वर के भुगाने से जीव पाप और पुण्य के फलों को भोगते हैं, अन्यथा कर्मसङ्कर हो जायेंगे, अन्य के कर्म अन्य को भोगने पड़ेंगे। - सत्यार्थप्रकाशः द्वादश समुल्लासः पृ. ४४७

ईश्वर पापों को कभी क्षमा नहीं करता - प्रश्नः ईश्वर अपने भक्तों के पापों को क्षमा करता है वा नहीं?

उत्तरः नहीं। क्योंकि जो पाप क्षमा करे तो उसका न्याय नष्ट हो जाय, और मनुष्य महापापी हो जायें। क्योंकि क्षमा की बात सुन ही के उनको पाप करने में निर्भयता और उत्साह हो जाये। जैसे राजा अपराध को क्षमा कर दे, तो वे उत्साह पूर्वक अधिक-अधिक बड़े-बड़े पाप करें, क्योंकि राजा अपना अपराध क्षमा कर देगा और उनको भी भरोसा हो जाए कि राजा से हम हाथ जोड़ने आदि चेष्टा कर अपने अपराध छुड़ा लेंगे और जो अपराध नहीं करते, वे भी अपराध करने से न डर कर पाप करने में प्रवृत्त हो जाएँगे। इसलिए सब कर्मों का फल यथावत् देना ही ईश्वर का काम है क्षमा करना नहीं।

ईश्वर की सिद्धि में प्रत्यक्षादि प्रमाण - प्रश्नः- आप ईश्वर-ईश्वर कहते हो, परन्तु उसकी सिद्धि किस प्रकार करते हो?

उत्तरः- सब प्रत्यक्षादि प्रमाणों से।

प्रश्नः- ईश्वर में प्रत्यक्षादि प्रमाण कभी नहीं घट सकते।

उत्तरः- इन्द्रियार्थ सन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेशयमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम्।

- न्यायदर्शन १/१/४

अर्थात् जो श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिह्वा, घ्राण और मन का, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, सुख-दुःख सत्यासत्य विषयों के साथ सम्बन्ध होने से ज्ञान उत्पन्न होता है, उसको प्रत्यक्ष कहते हैं, परन्तु वह निर्भ्रम हो।

अब विचारना चाहिए कि इन्द्रियों और मन से गुणों का प्रत्यक्ष होता है, गुणी का नहीं। जैसे चारों त्वचा आदि

इन्द्रियों से स्पर्श, रूप, रस और गन्ध का ज्ञान होने से गुणी जो पृथिवी उसका आत्मायुक्त मन से प्रत्यक्ष किया जाता है, वैसे इस प्रत्यक्ष सृष्टि में रचना विशेष आदि ज्ञानादि गुणों के प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष है।[२६]

इस प्रकार स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में ईश्वर सिद्धि के सन्दर्भ में वेद, उपनिषद्, तर्क आदि प्रमाणों के आधार पर बहुत विस्तार से लिखा है। इस प्रसंग में महर्षि की जो मौलिक देन है, वह यह है कि वह प्रत्यक्षादि प्रमाणों से ईश्वर की सिद्धि करते हैं।

प्रत्यक्ष के बारे में वे स्वीकार करते हैं कि जब जीवात्मा शुद्ध अन्तःकरण से युक्त योग समाधिस्थ होकर आत्मा और परमात्मा का विचार करने में तत्पर होता है, उसको उसी समय आत्मा और परमात्मा दोनों प्रत्यक्ष होते हैं। परमात्मा का यह प्रत्यक्ष केवल आत्मा युक्त मन से होता है, उसमें बाह्य इन्द्रियाँ कारण नहीं होतीं। ईश्वरकी सिद्धि में प्रत्यक्ष प्रमाण की स्वीकृति ऋषि दयानन्द के मौलिक और वैचारिक क्रान्तिकारी चिन्तन का परिणाम है।

स्वामी दयानन्द का ईश्वर विषयक एक-एक चिन्तन किसी दार्शनिक वैज्ञानिक की खोज से कम नहीं है। यथा जड़ पदार्थ कभी परमात्मा नहीं हो सकता और परमात्मा कभी जड़ नहीं हो सकता।

लक्षण प्रमाणाभ्यां वस्तु सिद्धिर्नतुप्रतिज्ञा मात्रेण।

सन्दर्भः-

१. (१) सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

– आर्य समाज का प्रथम नियम

(२) ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

– आर्य समाज का द्वितीय नियम

२. सत्यार्थप्रकाशः द्वादश समुल्लासः पृष्ठ ४२६, ४२८

३. सत्यार्थप्रकाशः द्वादश समुल्लासः पृष्ठ ४२८

४. सत्यार्थप्रकाशः सप्तम समुल्लासः पृष्ठ १७५

५. (१)**एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः। इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।।**

– ऋग्वेद १/१६४/६४

(२) **भुवनस्य यस्यपतिरेक एव नमस्यः ।**

– अथर्ववेद २/२/१

(३) **''न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते। न पंचमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते। नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते। स एक एव सकवृदेक एव।''**

– अथर्ववेद (१३/४/२) १६ से १८ मन्त्र

(४) **''भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्''।**

– यजुर्वेद १३/४

६. सत्यार्थप्रकाशः, सप्तम समुल्लासः पृष्ठ १७६

७. सत्यार्थप्रकाशः, सप्तम समुल्लासः पृष्ठ १९३

८. वही, पृष्ठ १९३

१०. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, ईश्वर प्रार्थना विषयः पृष्ठ ३

११. सत्यार्थ प्रकाशः अष्टम समुल्लासः पृष्ठ २११

१२. वही, पृष्ठ २११

१३. सत्यार्थप्रकाशः सप्तम समुल्लासःपृष्ठ १७८

१४. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, वेद विषय विचारः पृष्ठ ३३

१५. सत्यार्थप्रकाशः, सप्तम समुल्लासः पृष्ठ १८०

१६. वही, पृष्ठ १८०

१७. सत्यार्थप्रकाशः, सप्तम समुल्लासः पृष्ठ १८७

१८. वही, पृष्ठ १८७

१९. दार्शनिक संयोग दो प्रकार का मानते हैं। एक संयोगज और दूसरा समवायिक। समवाय सम्बन्ध गुण-गुणी में, कर्म-कर्मवान् में, अवयव-अवयवी में और जाति-व्यक्ति में रहता है। यह सम्बन्ध नित्य होता है। – युधिष्ठिर मीमांसक, स.प्र. (शताब्दी संस्करण) पृष्ठ ६६५

२०. सत्यार्थप्रकाशः द्वादश समुल्लासः पृष्ठ ४४९

२१. **इयं विसृष्टियति आबभूव यदिवादधे यदि वा न वेद।।**

– ऋग्वेद १०/१२९/७

२२. **यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति।**

यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व तद् ब्रह्म।।

– तैत्तिरीयोपनिषद् ३/१

२३. तत्त्वमसि, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, पृष्ठ ४४

२४. सत्यार्थप्रकाशः अष्टम् समुल्लासः पृष्ठ २२६

२५. विद्यार्थियों की दिनचर्या, स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, पृष्ठ ३८

२६. सत्यार्थ प्रकाशः, सप्तम समुल्लासः पृष्ठ १७८

– आर्य समाज शक्तिनगर, सोनभद्र (उ.प्र.)

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम–**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या–**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम–**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या–**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन–जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए 'आस्था–भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग–यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था–भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था–भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद–प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था–भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था–भजन' (चैनल) डिश–टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा–स्काई, वीडियोकोन, बिग–टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार–बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक–धर्म के प्रचार–प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

जीवन का प्रथम प्रश्न

- इन्द्रजित् देव

मनुष्य के जीवन में अनेक प्रश्न समुपस्थित होते हैं। उनमें से कुछ अपने हैं तो कुछ बेगाने हैं, कुछ तन के होते हैं। तो कुछ मन के भी होते हैं। कुछ भौतिक प्रश्न हैं तो कुछ आध्यात्मिक हैं। तात्पर्य यह है कि प्रश्न-दर-प्रश्न हैं। हम एक प्रश्न हल कर भी लेते हैं तो दूसरे प्रश्न उत्तर माँगते हैं। एक लम्बा प्रयास करते-करते जीवन व्यतीत हो जाता है। प्रश्नों का बोझ कम नहीं होता।

ऋषियों ने मनुष्य के समक्ष जो प्रश्न रखा है, उसे समझना अनिवार्य है। वह प्रश्न यह है कि मनुष्य प्रथम यह समझ ले कि वह कौन है? किसका है? उसका दर्जा क्या है? उसके जन्म का उद्देश्य क्या है? व उसका सहायक कौन है?

मनुष्य शिशु के रूप में जन्मता है। जन्म लेते ही उसका जातकर्म संस्कार किया जाता है, जिसमें पिता शिशु के कान में कहता है-वेदोसि अर्थात् तू ज्ञानवाला प्राणी है, अज्ञानी नहीं बनना। शिशु की जिह्वा पर सुवर्ण की शलाका से घृत व मधु चटाना तथा जिह्वा पर 'ओ३म्' लिखने का कार्य पिता करता है। अर्थात् हे पुत्र/पुत्री! तुम्हें मुख्य रूप में आध्यात्मिक जीवन अपनाना है। आत्मा की उन्नति, दृढ़ता तथा सुसंस्कारिता के लिए ही प्रयत्नशील रहना है। इसमें आने वाली बाधाओं को हटाना है। यह तभी होगा, जब ईश्वर के दिए ज्ञान अर्थात् वेदानुसार जीवन व्यतीत करेगा। यह उद्देश्य तभी पूर्ण होगा, जब उसे बोध कराया जाए कि वह कौन है, किसका है, आदि। इसलिए आशीर्वाद के रूप में पिता कहता है-

कोऽसि कतमोऽस्येषोऽस्यमृतोऽसि।

अर्थात् तू कौन है? तू कौन-सा है? इसमें पिता कहता है-तू अमृत है। तात्पर्य है कि तू शरीर नहीं है। यह शरीर तुम्हें ईश ने दिया, वस्तुतः तू आत्मा है, जिसकी मृत्यु कभी नहीं होगी। इसी के विकास हेतु तू जीवन भर प्रयत्नशील रहना। पिता के द्वारा प्रथम प्रश्न समझा देने के विपरीत व्यक्ति स्वयं को भूलकर या गहराई से स्वयं को न समझकर पदार्थों, वस्तुओं अथवा विषयों की तरफ ही दौड़ता है-

जिन्दगी भर तो हुई गुफ्तगू औरों से मगर-
आज तक हमारी हमसे ही मुलाकात न हुई।

अन्यान्य विषयों में मस्त-व्यस्त मनुष्य बहुत कुछ जान लेता है, परन्तु स्वयं को जानने का प्रयत्न तो दूर की बात है-

आकाश में ऊँची से ऊँची जिसकी उड़ान है,
सागर-तल में नीचे तक जिसकी पहचान है,
ज्ञान हो कि विज्ञान बहुत जान लिया जिसने-
हाय! मगर वह आदमी खुद से अनजान है।

एक बार उपदेश प्राप्त करने के लिए महर्षि सनत के पास मुनि नारद गए तो निवेदन किया-''भगवन्! मुझे कुछ ज्ञान दीजिएगा।'' महर्षि ने पात्रता जानने के उद्देश्य से पूछा-''अब तक तुम क्या-क्या जान चुके हो, प्रथम मुझे यह बताओ, ताकि मैं आगे की बात बताऊँ।''

नारद मुनि ने कुछ ग्रन्थों के नाम बताए-चारों वेद, इतिहास, पुराण, व्याकरण, गणित, खगोल, तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र, क्षत्र विद्या, भूत विद्या, ब्रह्म विद्या, वेदांग, नक्षत्र विद्या, शिल्प विद्या, ज्योतिष, वाद्य, नृत्य, गान, धनुर्वेद,उत्पात ज्ञान, निरुक्त आदि।

''इतने अधिक ग्रन्थ पढ़ चुकने के पश्चात् मेरे पास क्यों आए हो?''

''भगवन्! अहं शोचामि। मैं शोकग्रस्त हूँ, क्योंकि मैं मन्त्रवित् तो हो गया हूँ, परन्तु आत्मवित् नहीं हुआ। मैंने बहुत-सी बातें अन्यान्य विषयों में तो जान ली हैं, परन्तु मैं क्या हूँ, कौन हूँ, इससे तो अभी तक मैं सर्वथा अनभिज्ञ ही हूँ। मैंने सुना है- आत्मवित् तरति शोकम्। बिना स्वयं को जाने कोई मनुष्य शोक से मुक्त नहीं हो सकता, अतः मुझे आत्मज्ञान कराइएगा।''- छान्दोग्योपनिषद्

महर्षि सनत कुमार ने विस्तृत ज्ञान नारद को दिया। संक्षेप में- जो जीव आत्मज्ञानी व सर्वसिद्धयुक्त हो जाता है, वह आत्मदर्शी न तो मृत्यु से डरता है, न दुःखी होता है। वह सब यथार्थ व वास्तविक ही देखता है। सर्वत्र आत्मतत्त्व

ही देखते हुए वह शोकग्रस्त नहीं होता। कहा भी है- 'आत्मवित् न शोचति।' यजुर्वेद में भी कहा है-'तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः' अर्थात् इस एक आत्मा का साक्षात्कार कर लेने पर न तो मनुष्य को मोह होता है तथा न किसी भी प्रकार का शोक होता है। शोक तब तक रहता है, जब तक अविद्या से ग्रस्त व वशीभूत होकर मनुष्य सोचता है।

आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्योमैत्रेभ्यात्मनी व अरे दर्शनेन श्रवणेन मत्या विज्ञानेन सर्वमिदं विदितम्।

-वृहदारण्यकोपनिषद् २-४-५

अर्थात् आत्मा ही तो देखने योग्य है, जानने योग्य है, सुनने योग्य है, मनन करने योग्य है। निदिध्यासन अर्थात् निरन्तर ध्यान करने योग्य है। इसी आत्मा को ही दर्शन से, श्रवण से, मनन से और निरन्तर ध्यान-समाधि द्वारा साक्षात् अनुभव करने से ही यह सब कुछ विदित हो जाता है।

आत्मा की सिद्धि के लिए यह जानना आवश्यक है कि शरीर में आत्मा के लक्षण (लिंग) कितने हैं। न्याय दर्शनानुसार लक्षण छः हैं-इच्छाद्वेषप्रयत्न सुखदुःखज्ञानात्मनो लिङ्गमिति-अर्थात् इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख तथा ज्ञान। इनसे आत्मा के अस्तित्व का बोध होता है। जहाँ ये लक्षण नहीं होते, वहाँ आत्मा नहीं है। सुख देने वाले पदार्थ या व्यक्ति को प्राप्त करने की इच्छा तथा दुःख देने वाले पदार्थ अथवा व्यक्ति से दूर रहने या न प्राप्त होने की भावना को द्वेष कहते हैं तथा प्राप्त करने या दूर रहने के लिए जो प्रयास किया जाता है, उसे प्रयत्न कहते हैं। मन के अनुकूल प्राप्त फल व परिणाम को सुख तथा प्रतिकूल या रुकावट अथवा बाधा को दुःख कहा जाता है। अनुकूलता तथा प्रतिकूलता की भिन्नता को समझना ज्ञान कहलाता है। आत्मा जब शरीर में रहता है, तब ये छः गुण शरीर में दिखाई देते हैं पर शरीर में इच्छा-द्वेष तथा प्रयत्नादि गुण, लक्षण दिखाई नहीं देते।

आत्मा न पुरुष है, न स्त्री है तथा न ही नपुंसक है। जिस देह में प्रवेश करता है, तद्रूप हो जाता है। कहा जाता है, जैसे एक ही अग्नि पदार्थ किसी पदार्थ में प्रविष्ट हो तद्रूप हो जाता है, वैसे ही आत्मा जिस शरीर में प्रवेश करता है, उसके रूप एवं आकृति को धारण कर लेता है। आत्मा को न भूख लगती है, न ही प्यास सताती है। ये पार्थिव शरीर के गुण हैं। शरीर से सम्बद्ध होने पर ही आत्मा नेत्रों के माध्यम से देखता है, कानों के माध्यम से सुनता है, जिह्वा के माध्यम से आवृत हुआ आत्मा ही चखता है। आँख, कान व जिह्वा आदि इन्द्रियाँ तो आत्मा के साधन हैं, परन्तु इसके विपरीत यह भी सत्य है कि अशरीरी अवस्था में आत्मा को न दुःख होता है, न ही सुख अनुभव होता है। न कोई इच्छा सताती है तथा न किसी प्रकार का द्वेष होता है, न ये आत्मा को स्पर्श करते हैं-

.....अशरीरं वाचं सन्ति न प्रियाप्रिये स्पृशतः।

-छान्दोग्योपनिषद् ८/१२/१

आत्मा का महत्त्व यह भी है कि यही तो (ज्ञान चक्षुओं से) देखने योग्य है, जानने योग्य है, सुनने योग्य है, मनन करने योग्य है, निदिध्यासन अर्थात् निरन्तर ध्यान करने योग्य है। इसके दर्शन करने अर्थात् जानने से अनुभव करने से, श्रवण करने से, मनन करने से निरन्तर ध्यान-समाधि द्वारा साक्षात् अनुभव करने से ही सब कुछ विदित हो जाता है। इसी के परिणाम स्वरूप सब प्रकार के रहस्य खुल जाते हैं-

याज्ञवल्क्य ऋषि यहाँ जो **''आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः....''** आदि इसलिए कह रहे हैं कि जो यह पिण्ड में विद्यमान आत्मा तृप्ति सुख वा आनन्द की प्राप्ति के लिए निकला है, वह पहले अपने-आपको पहचाने, अपने वास्तविक उद्देश्य तथा साधनों को समझे। फिर वह इस आत्मा की भी आत्मा अर्थात् सर्वव्यापक एवं अन्तर्यामी सर्वज्ञ ब्रह्माण्ड की आत्मा अर्थात् परमात्मा की ओर अग्रसर होगा, तभी वास्तविक सुख, वास्तविक आनन्द तथा वास्तविक तृप्ति मिलेगी। बिना आत्मज्ञान के संसार भटक रहा है-

बिन आत्म-ज्ञान के दुनिया में इन्सान भटकते देखे हैं
आम बशर की तो बात ही क्या सुल्तान भटकते देखे हैं।।
जो चैन व शान्ति की दौलत है, मिलती है आत्म-ज्ञानी को।
धनहीन को तो भटकना है, धनवान् भटकते देखे हैं।।
सब ज्ञान तो उसने पा ही लिया, पर आत्मज्ञान ही पाया न।
यही कारण है कि पण्डित भी अनजान भटकते देखे हैं।।
जो भटकाते हैं दुनिया को, वे आप ही भटकते देखे हैं।

गुणहीन भटकते देखे हैं, गुणवान भटकते देखे हैं।।
जो आत्म ज्ञानी होता है, बलवान् है सारी दुनिया में।
बिन इसके 'पथिक' इस दुनिया में बलवान् भटकते देखे हैं।।

बालक के नामकरण-संस्कार के अवसर पर पिता पुत्र के नासिका द्वार से बाहर निकलते हुए वायु का स्पर्श करके फिर कहता है-

कोऽसि कतमोऽसि कस्यासि को नामासि।
यस्य ते नामामन्महि यं त्वा सोमेनातीतृपाम्।।

अर्थात् आज हमने तेरा नामकरण किया है, जिस तुझको दूध से तृप्त किया है, वह तू कौन है? किसका है? क्या नाम है तेरा?

कोऽयिकतमोऽस्येषोऽस्यमृतोऽसि।

नासिका के आगे हाथ रखने का अर्थ यह है कि हे बालक! जब तक श्वास चलेंगे, तब तक तुम यह स्मरण रखना कि मृत्यु तुम्हें मार नहीं सकती। तू और प्रश्न हल कर पाए अथवा न कर पाए, ये कार्य अवश्य करना कि तू जीवन भर स्वयं को खोजते रहना, देखते रहना कि तू स्वयं क्या है? कहीं ऐसा न हो कि-

खुद की न की तलाश बड़ी चूक हो गई,
यूँ तो बरसों लगाए हमने सुख की तलाश में।

आत्मा जिस शरीर में रहती है, कई वर्षों तक उसमें रह चुकने के बाद भी उसे यह पूर्ण ज्ञान नहीं हो पाता कि इसमें कितनी अस्थियाँ, कितनी नाड़ियाँ, कितनी नसें, कितना भार विद्यमान है तथा न ही हमें यह जानकारी हो पाती है कि आत्मा कैसी है, वह कार्य कैसे करती है, उसका रंग-रूप, कार्य तथा भार है अथवा नहीं-

आत्मा व शरीर का रिश्ता भी अजीब रिश्ता है,
उम्र भर साथ रहे फिर भी परिचय न हुआ।

लोग शरीर के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं, क्योंकि शरीर साकार वस्तु है, परन्तु आत्मा के अस्तित्व से सहमत नहीं होते। आत्मा शरीर से भिन्न कोई वस्तु है, इसका वर्णन वेद व दर्शनों में उपलब्ध है, परन्तु इनका अध्ययन न करने से बड़े-बड़े आचार्य, संन्यासी, विश्वविद्यालयों के कुलपति, उपकुलपति, प्रोफेसर, उपदेशक व लेखक आदि भी केवल शरीर व भौतिक पदार्थों को ही मानते हैं। ऐसे लोगों के लिए निवेदन है-

शरीर दाहे पातकाभावात्

- न्यायदर्शन ३-१-४

अर्थात् शरीर को आत्मा माना जाए या पृथक् चेतनात्मा को न माना जाए तो जीवित व्यक्ति को जलाने पर मनुष्य को हिंसा का पाप लगता है, व दण्ड को प्राप्त करता है। वैसे ही मृत शरीर पर जलाने को भी पाप लगना चाहिए, दण्ड भी मिलना चाहिए, किन्तु ऐसा नहीं होता अर्थात् दण्ड नहीं मिलता। इससे स्पष्ट है कि आत्मा जो है, वह शरीर से भिन्न है।

सव्य दृष्टस्येतरेण प्रत्यभिज्ञानात्

- योगदर्शन ३-१-७

अर्थात् बाईं आँख से देखे हुए पदार्थ का दाहिनी आँख से भी ज्ञान होता है। इससे स्पष्ट है कि आत्मा इन्द्रियों से पृथक् है। एक व्यक्ति ने यज्ञदत्त को चण्डीगढ़ में देखा। कुछ दिनों के पश्चात् दिल्ली में फिर देखा। तब कहता है-यह वही यज्ञदत्त है, जिसे मैंने एक वर्ष पूर्व चण्डीगढ़ में देखा था। दोनों स्थानों पर देखने वाला व्यक्ति एक ही है। उसे ही यह अनुभव हुआ। उसके इस अनुभव को ही 'प्रत्यभिज्ञान' कहा जाता है। किसी भी व्यक्ति की बाईं-दाईं आँखों में स्मरण-शक्ति नहीं। आँख के माध्यम से देखने वाला तथा स्मरण रखने वाला पृथक् चेतन आत्मा है।

आज मनुष्य अधिकांशतः दुःखी है। आत्मा की उपेक्षा तथा शरीर को ही अपना-आप समझकर इसी को खिलाने, पिलाने, रिझाने, दिखाने व मनाने के लिए हम प्रयत्नशील हैं। परिणाम आपके समक्ष है। शारीरिक ही नहीं, आत्मिक क्लेशों से भी ग्रस्त मनुष्य इसी दिशा में अग्रसर है।

बारह यात्री एक नगर से दूसरे नगर को जा रहे थे। मार्ग में नदी आ गई। नदी पार करने के लिए न तो पुल था, न ही नाव थी। एक बुद्धिमान् यात्री ने समाधान करते हुए कहा-''हम सभी एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर मिल कर पार कर लेंगे।'' सबने ऐसा ही किया तथा कुशलतापूर्वक नदी पार कर गए। पार जाकर बुद्धिमान् व्यक्ति ने कहा-''अब गिनती कर लेनी चाहिए, ताकि पता चले कि हमारा कोई साथी छूट तो नहीं गया।'' उसके साथियों ने कहा-''तुम बुद्धिमान् हो। यह काम तुम्हीं करो।'' उसने गिना तो

ग्यारह ही व्यक्ति थे, क्योंकि उसने स्वयं को गिना नहीं था। दूसरे, तीसरे व अन्य सबने भी गिना तो भी कुल ग्यारह व्यक्ति ही पूर्वोक्त भूल के कारण गिने जाते रहे। तभी एक अन्य यात्री आ निकला तो उसने पूछा-''तुम दु:खी क्यों हो रहे हो?''

''हमारा एक सहयात्री खो गया है।'' पूरी घटना सुनने के बाद उस व्यक्ति ने देखा कि वस्तुत: वे लोग बारह ही हैं। उसने कहा-''मैं यदि खोए हुए तुम्हारे साथी को प्रस्तुत कर दूँ तो?''

''तब हम तुम्हें अपना भगवान् स्वीकार कर लेंगे।''

''ठीक है। मैं बारी-बारी तुम सब के मुँह पर चपत लगाऊँगा। पहला व्यक्ति तब एक बोले। फिर दूसरे व्यक्ति के मुँह पर लगाऊँगा तो बोलना दो। इसी प्रकार.....।'' तद्नुसार व्यक्ति ने कार्य किया तो बारी-बारी से एक, दो.....बोलते हुए वे बारह तक बोल गए तो वे प्रसन्नता से उछलने लगे। उन्हें 'खोया साथी' मिल गया था।

''आप तो हमारे भगवान् हो। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद है कि आपने हमारे खोये सहयात्री को ढूँढ़ दिया है।''

हम सब यही कर रहे हैं। जीवन-यात्रा में हम बारह यात्री चले थे, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, एक मन व एक आत्मा। हमने आत्मा को भुला दिया। ग्यारह से आगे बारहवीं आत्मा का न ज्ञान है, न ही चिन्ता है। वह खो गई है। इसी कारण अशान्त हैं हम। आत्मा का प्रश्न जीवन का प्रथम प्रश्न है। इसे हल करने के लिए भगवान् की शरण में पूर्वोक्त यात्रियों की भाँति हमें भी जाना होगा। अन्य मार्ग नहीं है- नान्य: पन्थाविद्यतेऽयनाय।

चूना भट्टियाँ, सिटी सेन्टर के निकट, यमुना नगर-१३५००२, हरियाणा

अग्नि और जल संसार के सब व्यवहारों के कारण हैं, इस से गृहस्थजन विशेष कर अग्नि और जल के गुणों को जानें और गृहस्थ के सब काम सत्य व्यवहार से करें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२४

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

अनुवाद

- डॉ. रामवीर

यह करने वाला ही जाने
अनुवाद है कितनी कठिन कला,
भाषाद्वय में नैपुण्य बिना
अनुवाद कहाँ होता है भला।
भाषाद्वय पर पूर्णाधिकार
जैसे हों किसी की दो-दो नार,
इक को ही कठिन है खुश रखना
दो की तो अपेक्षाएँ अपार।
अनुवादक की जिम्मेदारी
सोचो होती कितनी भारी,
केवल इक शब्द की गलती भी
ला सकती है आफत भारी।
संस्कृत भाषा में 'कोटि' के
दो अर्थ बताए जाते हैं,
करोड़ और श्रेणी दोनों
इक साथ पढ़ाए जाते हैं।
'वह उच्च कोटि का लेखक है'
यहाँ 'कोटि' का मतलब श्रेणी है,
यदि 'कोटि' का अर्थ करोड़ कोई
करता हो तो कितनी गफलत है।
'त्रयस्त्रिंशत् कोटि देवता' में
तैंतिस तो है अनुवाद ठीक,
पर कोटि को कह देना करोड़
है नासमझी का ही प्रतीक।
अनुवाद की एक भूल ने ही
ये कैसे भ्रम फैला डाले,
तैंतीस श्रेणी देवों की जगह
तैंतीस करोड़ पुजवा डाले!
अनुवाद की भूलों के मारे
देखो ये हिन्दू बेचारे,
तीरथ तीरथ मन्दिर-मन्दिर
दिन रात फिरें मारे-मारे।

- ८६, सैक्टर ४६, फरीदाबाद (हरि)-१२१०१०
चलभाष: ९९१९२६८१८६

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित नये संस्करण

१. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (२ भाग में)

मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

२. 'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरितः

मूल्य - रु. ६०/- पृष्ठ संख्या- १९२

१०० से अधिक उपशीर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिल जले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

३. इतिहास की साक्षीः लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

मूल्य - रु. ५०/- पृष्ठ संख्या - ९६

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यथा दुर्लभ हैं।

४. आत्म कथा- महर्षि दयानन्द सरस्वती

मूल्य - रु. १५/- पृष्ठ संख्या - ४८

५. जिज्ञासा-विमर्श लेखक-आचार्य सोमदेव

मूल्य - रु. १००/- पृष्ठ संख्या - २५८

आध्यात्मिक क्षेत्र में सूक्ष्म दार्शनिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्नों का शास्त्रीय एवं तर्क-सम्मत समाधान इस ग्रन्थ में किया गया है। आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि विषयों से सम्बन्धित प्रश्न बहुत जटिल होते हैं। विद्वान् लेखक ने अपने विस्तृत स्वाध्याय एवं ऊहा के बल पर ऐसे सभी प्रकरणों में सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। कालान्तर में सन्दर्भ हेतु काम आने वाला ग्रन्थ सिद्ध होगी, क्योंकि अधिकांश समाधान महर्षि कृत ग्रन्थों, वेदों एवं वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों के आधार पर किये गए हैं। वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि की दृष्टि से भी यह एक उपयोगी पुस्तक है।

पुस्तक – परिचय

पुस्तका का नाम - सत्यार्थ प्रकाश भाष्य
भाष्यकार- वाचस्पति
सम्पादक- प्रदीपकुमार शास्त्री
प्रकाशक- सत्यधर्म प्रकाशन झज्जर,
हरियाणा ९८१२५६०२३३
मूल्य- १००/- **पृष्ठ संख्या**- १९२

महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश की रचना कर सत्य का मार्ग प्रशस्त किया है। उन्होंने आडम्बर, अज्ञान व अन्धकार को दूर किया है।

उस समय धर्मान्धता, बाह्याडम्बर का साम्राज्य चल रहा था, घोर अन्धकार में लोग अपनी स्वार्थपूर्ति कर रहे थे, अपना उल्लू सीधाकर रहे थे। सच्चाई से दूर, अज्ञान के खड्डे में गिर रहे थे। अनेक पाखण्डियों ने धर्म के ठेकेदार बनकर अपने को योगी, तपस्वी व महान् सिद्ध कर रखा था। मूर्तिपूजा, पर्दाप्रथा, स्त्रियों को अशिक्षित रखना आदि दूषण समाज में फैले हुए थे। वेद के शब्द किसी के कानों में न पड़े यदि ऐसा हो भी जाय तो शीशा गर्म करके कान में डाल देते थे। अत्याचारों का बोलबाला था। ईश्वर के प्रति मनगढ़न्त कथाएँ जोड़ी जा रही थीं। भोली-भाली जनता को ठगा जा रहा था। सत्यार्थ प्रकाश के पढ़ने से वास्तविकता का ज्ञान होने लगा। वेदों के बाद महत्त्वपूर्ण ज्ञानार्जन के लिए सत्यार्थ प्रकाश है। सत्यार्थ प्रकाश के प्रति जनमानस की भावना प्रतिकूल विरोधाभास की रही पर आलोचना, अपशब्दों का प्रयोग करना कहाँ की बुद्धिमानी है?

लेखक ने प्रथम सम्मुल्लास एवं द्वितीय सम्मुल्लास का भाष्य कर सरस, सरल व प्रश्न उत्तर के माध्यम से पाठकों के लिए प्रस्तुत सामग्री सारगर्भित कर दी है। पाठकों की शंका समाधान करके प्रत्युत्तर दिया गया है। ईश्वर के १०० नाम हैं, वे किस प्रकार और क्यों है? जन मानस भोली जनता के सामने अर्थ का अनर्थ कर रहे थे। उन्हें स्पष्ट किया गया है। द्वितीय सम्मुल्लास में अनेक प्रकार की शिक्षाओं के माध्यम से सभी प्रकार की बातों का ज्ञान कराया गया है।

इसमें भी लोगों की शंकाएँ रही। स्वामी जी को गृहस्थ सम्बन्धी बातों से क्या अभिप्राय था? इसका भी सटीक उत्तर दिया गया है। वास्तव में सार की बात को ग्रहण करना चाहिए। कहा है सार-सार को गहि रहे, थोथा दे उड़ाय। जीवन को सफलीभूत बनाने के लिए सत्य बात जो जीवन को श्रेष्ठ बनाती है, उसे अवश्य स्वीकार करना चाहिए। स्वामी जी के समय जो अन्धविश्वास थे, आज भी अनेक अन्धविश्वास एवं पोप लीलाओं ने अपना गढ़ बना लिया है। सत्य कटु होता है। पाठकों को चाहिए कि भ्रान्तियों को दूर करने के लिए पठन-पाठन करें आपको अमूल्य निधि प्राप्त होगी। भाष्य सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। भाष्यकार एवं सम्पादक का आभार।

-देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।

ज्योतिष – परिचय शिविर

आर्यजगत् के प्रसिद्ध ज्योतिष-विद्वान्, श्री मोहन कृति आर्ष पत्रक (पंचांग) के निर्देशक-रचयिता श्री दार्शनेय लोकेश जी, नोयडा ने ऋषि उद्यान, अजमेर में शुद्ध ज्योतिष-परिचय का प्रशिक्षण देने के लिए चार दिन का समय प्रदान किया है। वे २५ से २८ जून २०१६ तक प्रशिक्षण प्रदान करेंगे व ज्योतिष सम्बन्धी शंकाओं-समस्याओं का भी समाधान करेंगे। इसमें डेढ़-डेढ़ घण्टे की दो कक्षाएँ प्रातः ९.३० से ११ व दोपहर २ से ३.३० तक होगी। प्रातः-सायं यज्ञ-प्रवचन यथावत् चलते रहेंगे।

इस शिविर में भाग लेने के इच्छुक प्रबुद्ध आर्यजन व ज्योतिष में रुचि रखने वाले महानुभव सम्पर्क कर सकते हैं। सूचना व स्वीकृति प्राप्त सज्जन ही इसमें भाग ले सकेंगे। संख्या सीमित रखी गई है। **सम्पर्क- आचार्य सत्यजित्, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.) दूरभाष- ०९४१४००६९६१ (रात्रि- ८.३० से ९.३०)**

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१५ से ३० अप्रैल २०१६ तक)

१. श्रीमती तारावंती कोहली, दिल्ली २. मैसर्स स्वास्तिकामा चेरिटेबिल ट्रस्ट, अमरावती, महाराष्ट्र ३. श्री राजन हाण्डा, नई दिल्ली ४. श्री रजनीश कपूर, नई दिल्ली ५. श्री जे.पी. चतरा, करनाल, हरियाणा ६. श्री नवीन कुमार आर्य, सोनीपत, हरियाणा ७. श्री विकास दलाल, गुडगाँव, हरियाणा ८. श्री रामनरेश, सूरत, गुजरात ९. श्रीमती सरोजबाला, हिसार, हरियाणा १०. श्री पृथ्वीराज आन्जना, छोटी सादड़ी, राज. ११. श्री वेदीराम, गाजियाबाद, उ.प्र. १२. श्री सुरेन्द्र सिंह, नई दिल्ली १३. श्रीमती कंचन आर्या, अजमेर १४. श्रीमती संगीता आर्या, रोहतक, हरियाणा १५. श्री उमेश मेहता, रोहतक, हरियाणा १६. श्री लालचन्द यादव, श्रीगंगानगर, राज. १७. श्री वरदीचन्द गुप्ता, जयपुर, राज. १८. श्री सत्येन्द्र सिंह व श्रीमती मिथलेश, अजमेर १९. श्री मदन कथुरिया व श्रीमती कमला कथूरिया २०. श्री देशबन्धु गुप्ता, पंचकुला, हरियाणा २१. मैसर्स जेनिथ एन्टरप्राइजेज, नई दिल्ली।

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१५ से ३० अप्रैल २०१६ तक)

१. श्रीमती तारावंती कोहली, दिल्ली २. श्रीमती ममता अरविन्द अवस्थी, जोधपुर, राज. ३. श्री ब्रजभूषण गुप्ता, पंचकुला, हरियाणा ४. कै. चन्द्रप्रकाश त्यागी व श्रीमती कमलेश त्यागी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड़ ५. मेजर रत्न सिंह यादव, रेवाड़ी, हरियाणा ६. श्री रिषभ गुप्ता, अम्बाला केन्ट, पंजाब ७. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, अजमेर ८. श्री बलवीर सिंह बत्रा, अजमेर ९. श्री मनोज आर्य, चरखी दादरी १०. श्री सुभाष नवाल, अजमेर ११. श्री मयंक कुमार, अजमेर १२. श्री कोटेश्वर, अजमेर १३. माताजी, अजमेर १४. श्रीमती रतन देवी, अजमेर १५. श्री रतनलाल तापडिया, अजमेर १६. श्री देवेन्द्र मदान, अजमेर १७. श्री कैलाश शर्मा, अजमेर १८. श्री अर्जुन मुनि, रोजड़, गुजरात १९. श्री शान्तिस्वरूप टिक्कीवाल, जयपुर, राज. २०. श्री भँवरलाल जोधपुर, राज.।

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. १५ से २२ मई, २०१६ **आर्यवीर शिविर,** सम्पर्क- ०९४६००१६५९०

२. ३० मई से ५ जून, २०१६ **आर्य वीराङ्गना शिविर,** सम्पर्क- ०९४६००१६५९०

३. १२ से १९ जून, २०१६- **योग-साधना शिविर,** सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

ऋषि मेला २०१५ दानदाता सूची

६०१. श्री रमेश अग्रवाल, हिण्डौन सिटी ६०२. श्री दिवाकर गुप्ता ६०३. श्री किशन/श्रीमती सरला नवाल, गुलाबपुरा, राज. ६०४. श्री शिवदत्त लाहोटी, कड़ैल ६०५. श्रीमती सरला देवी, अजमेर ६०६. श्री श्यामसुन्दर शर्मा, टोंक, राज. ६०७. आर्यसमाज बारान ६०८. श्री बाबूलाल ६०९. श्री राजेन्द्रप्रसाद सिंह आर्य, समस्तीपुर, बिहार ६१०. श्री योगेश्वरदयाल, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. ६११. श्रीमती कँचन कंवर ६१२. डॉ. हेमचन्द, नजफगढ़, नई दिल्ली ६१३. श्री हनुमान आर्य, भिवानी, हरियाणा ६१४. श्रीमती कान्ता नागपाल, पानीपत, हरियाणा ६१५. श्री वेदप्रेम देव आर्य, चुरु, राज. ६१६. श्री विजयकुमार विश्वनाथन, लातुर, महाराष्ट्र ६१७. आर्यसमाज, झज्जर, हरियाणा ६१८. श्री जगदीश प्रसाद रींगस ६१९. श्रीमती भगवती जैन, अहमदाबाद, गुजरात ६२०. श्रीमती उषा हरिपाल सिंह, नई मुम्बई ६२१. श्री जयकिशन तोषनीवाल, अजमेर ६२२. श्री मनीष नमन कुमार आचार्य, बीड़, महाराष्ट्र ६२३. वाशी, नई मुम्बई ६२४. स्वामी आर्यानन्द, फजिल्का, पंजाब ६२५. ओमप्रकाश आर्य, वैशाली, बिहार ६२६. श्री गोवर्धन आर्य, देवगढ़, (देवाल) ६२७. श्री रामगोपाल गर्ग, अजमेर ६२८. श्रीमती सुधा त्रिपाठी, अजमेर ६२९. श्री ईश्वरमित्र आर्य, करनाल, हरियाणा ६३०. श्री जगदीश आर्य, भिवानी, हरियाणा ६३१. श्रीमती उर्मिला, मेरठ, उ.प्र. ६३२. श्री रौनक श्रीमान, अजमेर ६३३. श्री अशोक त्रिपाठी, वाराणसी, उ.प्र. ६३४. श्री दिनेश वाजपेयी, विदिशा ६३५. श्री चन्द्रप्रकाश झँवर, शाहपुरा, राज. ६३६. मंत्री जी, आर्यसमाज नैनीताल ६३७. श्री हरिदास, नरैना, राज. ६३८. श्री देवप्रकाश यादव, अजमेर ६३९. श्री तपेश्वर कुमार शर्मा, रायपुर, छत्तीसगढ़ ६४०. श्री दयालदास अहुजा, रायपुर, छत्तीसगढ़ ६४१. श्री हरिकिशन पिम्परी पुणे, महाराष्ट्र ६४२. श्रीमती अमुल्या डोरा, गंजम, ओडिशा ६४३. श्री रमन लाल, बुहरानपुर, म.प्र. ६४४. श्री जे.एल. प्रभाकर राव, बैंगलोर ६४५. श्री राजेन्द्र सिंह, नई दिल्ली ६४६. श्री एम.सी. मोहन्ती, बैंगलोर

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४**

जिज्ञासा समाधान - १११

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा- मैं परोपकारी का आजीवन सदस्य वर्षों से हूँ। पत्रिका पढ़कर बड़ा आनन्द आता है। बहुत कुछ अच्छी जानकारी मिलती है। धन्यवाद वसन्त

(क) महर्षि दयानन्द के अनुसार- ''कर्मों का फल भुगतना ही पड़ता है। पापकर्मों को ईश्वर कभी-भी क्षमा नहीं करता।'' तो मनुष्य ईश्वर की प्रार्थना-स्तुति क्यों करें?

- संसार में, एक व्यक्ति किसी के प्रति अपराध करता है, किन्तु क्षमा माँगने पर, पश्चात्ताप करने पर प्रथम व्यक्ति उसको क्षमा कर देता है, क्या ईश्वर को इसी प्रकार क्षमा नहीं कर देना चाहिए? कहते हैं- वह बड़ा दयालु है, तो उसको दया क्यों नहीं आती?

(ख) प्राचीन काल में भी चारवाक के नाम से एक नास्तिक मत-(दर्शन) प्रचलित था, जो ईश्वर तथा पुनर्जन्म को नहीं मानते थे। **ऋणं कृत्वा घृतम् पिवेत्, भस्मीभूतस्य देहस्य पुरागमनम् कुतः,** ऐसा मानते थे।

(ग) एक व्यक्ति बिल्कुल नास्तिक है। ईश्वर की सत्ता को मानने से इन्कार करता है। लोगों को कहता है- ईश्वर नाम की कोई हस्ती संसार में नहीं है, लोग भ्रम में पड़े हुए हैं। किन्तु कर्म अच्छे करता है, बड़ा समाज सेवी भी है। क्या उस पर नाराज नही होता ईश्वर?

मेरे एक परममित्र हैं, जो सिरसा में रहते हैं, लेखक व कवि हैं, रिटायर्ड प्रिंसिपल-एम.ए. बी.एड. हैं, अमर शहीद भगतसिंह के नाम पर एक ट्रस्ट चलाते हैं, जिसमें दसवीं पास किए हुए गरीब छात्रों को जो आगे पढ़ना चाहते हैं उन्हें नियमित आर्थिक सहयोग देते हैं। इस संस्था के अनेक सदस्य हैं, मैं भी हूँ। किन्तु ये महाशय ईश्वर को बिल्कुल नहीं मानते, कहते हैं- प्रकृति से सब अपने आप होता है। उनका आहार-विहार, विचार-व्यवहार सब अच्छा है। अस्सी से ऊपर की आयु है। बिल्कुल स्वस्थ हैं, किन्तु ईश्वर को बिल्कुल नहीं मानते। क्या ऐसे लोगों से ईश्वर नाराज नहीं होता? क्यों?

- डॉ. एस.एल. वसन्त, बी-१३८४, नागपाल स्ट्रीट, फाजिल्का-१५२१२३ (पंजाब)

समाधान- **(क)** महर्षि दयानन्द की वैदिक मान्यतानुसार कर्मों का फल भोगना पड़ता है। किये हुए पाप कर्मों को ईश्वर क्षमा नहीं करता, वह तो न्यायपूर्वक उन कर्मों का फल यथावत् देता है। परमेश्वर के द्वारा पाप कर्म क्षमा न करने पर आपकी जिज्ञासा है कि फिर ईश्वर की स्तुति प्रार्थना क्यों करें? इस विषय में हम यहाँ पहले महर्षि दयानन्द के विचार लिखते हैं-

''**प्रश्न**- परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करनी चाहिए वा नहीं? **उत्तर**- करनी चाहिए।

प्रश्न- क्या स्तुति आदि करने से ईश्वर अपना नियम छोड़, स्तुति प्रार्थना करने वाले का पाप छुड़ा देगा?

उत्तर- नहीं।

प्रश्न- तो फिर स्तुति प्रार्थना क्यों करना?

उत्तर- उसके करने का फल अन्य ही है।

प्रश्न- क्या है?

उत्तर - स्तुति से ईश्वर में प्रीति, उसके गुण-कर्म-स्वभाव से अपने गुण कर्म स्वभाव का सुधरना। प्रार्थना से निराभिमानता, उत्साह और सहाय का मिलना। उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होना।'' स.प्र. ७।

यहाँ महर्षि के मतानुसार स्तुति प्रार्थना से पाप क्षमा तो नहीं होंगे, किन्तु स्तुति-प्रार्थना करने के अन्य अनेक लाभ बताए हैं। इन अन्य लाभों को प्राप्त करने के लिए ईश्वर की स्तुति प्रार्थना आवश्य करें, करनी चाहिए। हम मनुष्य जो लौकिक कार्य करते हैं, वह भी लाभ ही के लिए करते हैं। किसी कार्य को हमने पाँच लाभ प्राप्त करने के लिए प्रारम्भ करने का विचार किया। विचार करने पर पता लगा कि इस कार्य से पाँच लाभ न होकर, चार ही लाभ होंगे और जो लाभ होंगे, वे बड़े महत्त्वपूर्ण लाभ प्राप्त होंगे। ऐसी स्थिति में विचारशील व्यक्ति को क्या पाँच लाभों में से एक लाभ न मिलता देखकर, उस कार्य को छोड़ देना चाहिए या करना चाहिए? बुद्धिमान् व्यक्ति निश्चित रूप से इस कार्य को छोड़ेगा नहीं, अपितु चार लाभ के लिए अवश्य करेगा। ऐसे ही ईश्वर की स्तुति प्रार्थना से पाप छूटने वाला

लाभ तो नहीं हो रहा, किन्तु अन्य बहुत से सद्गुण रूप सदाचार प्राप्त हो रहे हैं, जिनके प्राप्त होने पर पाप कर्म करने की प्रवृत्ति नष्ट होती है। क्या ऐसे ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, रूप, कर्म को छोड़ना चाहिए? तो इसका प्रत्येक विवेकशील व्यक्ति यही उत्तर देगा कि ऐसे कर्मों को कदापि नहीं छोड़ना चाहिए। इसलिए गुणों में प्रीति, अपने गुण कर्म स्वभाव को सुधारने, निरभिमानता, उत्साह और ईश्वर का सहाय प्राप्त करने के लिए ईश्वर की स्तुति प्रार्थना करनी चाहिए।

– संसार में किसी व्यक्ति के प्रति किये गये अपराध को व्यक्ति सहन कर, उस अपराध को करने वाले अपराधी को क्षमा कर देता है। यदि क्षमा करता है तो वह धर्म का पालन कर रहा है। जब हम व्यक्तिगत हानि, अपराध, अपमान आदि के होने पर किसी को क्षमा करते हैं, तो यह उचित है, यह धर्म कहलायेगा, जो महर्षि मनु ने धर्म के दश लक्षणों में से एक 'क्षमा' कहा है। यदि व्यक्ति सामाजिक और राष्ट्रीय अपराधी को क्षमा करता है, तब वह धर्म न होकर अधर्म हो जायेगा, अन्याय हो जायेगा।

ऐसे ही न्यायकारी परमेश्वर स्वअपराधियों को सहन करने वाला है, क्षमा करने वाला है, जो कोई परमेश्वर को गाली देता है, उसको छोटा मानता है, उसकी सत्ता को स्वीकार नहीं करता, ऐसे व्यक्ति को अपने प्रति किये इस दुर्व्यवहार को सहन करता है, क्षमा करता हैं, किन्तु जब व्यक्ति उसकी आज्ञा का पालन न कर, पाप कर्म करता है अर्थात् शरीर, मन, वाणी से दूसरे की हानि करता है, तब न्यायकारी परमात्मा उसको क्षमा न कर दण्डित करता है। यह उसकी दया है, दयालुपना है। यदि परमेश्वर ऐसा न करे तो व्यक्ति अधिक-अधिक पाप कर्म कर अधिक-अधिक अधोगति को प्राप्त हो जावे। जब परमात्मा उसके पाप कर्म का फल देता है, तो फल भोगने से पाप क्षीण होते हैं, यह परमेश्वर की दया नहीं तो क्या है। उसको पाप कर्मों को भुगा कर फिर से मनुष्य शरीर देकर उन्नति का अवसर देना- इसमें परमात्मा की दया ही तो द्योतित हो रही है। परमात्मा तो दया का भण्डार है, हम अज्ञानी लोग उसकी दया को समझ नहीं पाते, यह हमारा दोष है।

(ख) चारवाक का मत वाममार्ग नास्तिक मत रहा है, उनकी विचारधारा सर्वथा वेद विरुद्ध थी। जैसे-

अग्निरुष्णों जलं शीतं शीतस्पर्शस्तथाऽनिलः।
केनेदं चित्रितं तस्माद् स्वभावात्तद्व्यवस्थितः।।
न स्वर्गो नाऽपवर्गो वा नैवात्मापारलौकिकः।
नैव वर्णाश्रमादीनां क्रियाश्च फलदायिकाः।।
यावज्जीवेत्सुखं जीवेदृणं कृत्वा घृतं पिवेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।।

– चारवाक दर्शन

अर्थात्- अग्नि उष्ण है, जल शीतल है, वायु शीत स्पर्शवाला है। इस वैविध्य को किसने चित्रित किया है। इसलिए स्वभाव से ही इनकी तत्तद् गुण युक्त स्थिति जाननी चाहिए, अर्थात् कोई जगत् का कर्त्ता नहीं है।

न कोई स्वर्ग है, न कोई नरक है और न कोई परलोक में जाने वाली आत्मा है और न वर्णाश्रम की क्रिया फलदायक है।

इसलिए जब तक जीवे, तब तक सुख से जीवे, जो घर में पदार्थ न हो, तो ऋण लेके आनन्द करे, ऋण देना नहीं पड़ेगा। क्योंकि जिस शरीर ने खाया-पीया है, उसका पुनरागमन न होगा। फिर किससे कौन माँगेगा और कौन देवेगा।

यह मत चारवाक का रहा है। इसमें से जो वेद विरुद्ध आचरण है, उसका तो परमेश्वर अवश्य ही दण्ड देगा। हाँ, जो कोई केवल ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करता, इतने मात्र से ईश्वर उस पर रुष्ट नहीं होता। जब व्यक्ति ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करता और प्रायः करके ईश्वर की न्याय व्यवस्था से परे होकर, विपरीत कार्यों में लग जाता है। जिसका परिणाम अधोपतन होता है।

(ग) आपने जिन सज्जन के विषय में कहा है, वे भले ही ईश्वर को नहीं मानते, किन्तु कार्य अच्छे कर रहे हैं, यह अच्छा कार्य उनके सुख का कारण है, न कि ईश्वर को न मानना कारण है। ईश्वर की आज्ञा है कि मनुष्य श्रेष्ठ कर्म करे और जब व्यक्ति श्रेष्ठ कर्म करता है तो उसको अवश्य ही ईश्वर व्यवस्था से सुख रूप फल मिलेगा। यह ईश्वरीय नियम है कि श्रेष्ठ कर्म करने वाले को सुख और विपरीत कर्म करने वाले को दुःख होगा।

हाँ यह अवश्य है कि जब व्यक्ति ईश्वर की सत्ता को

स्वीकार करके चलता है, उसी को संसार का रचयिता मानता है, कर्मफल देने वाला मानता है, पुनर्जन्म को मानता है और वेद के उपदेश को स्वीकार करता है, तब व्यक्ति का आत्मोत्कर्ष अत्यधिक होता है।

जो लोग यह कहते हैं कि संसार का बनाने वाला कोई नहीं, संसार अपने आप बन गया, यह कथन बालपन का ही है। जब हमारे सामने कोई वस्तु घर, गाड़ी, दुकान, भोजन आदि बिना बनाने वाले के नहीं बन सकता, तो इतना बड़ा संसार कैसे बिना कर्त्ता के बन सकता है। इसलिए जब व्यक्ति मनुष्यों द्वारा बनाई गई वस्तुओं को देख विचार करता है कि यह किसी-न-किसी के द्वारा बनाई गई है, अपने आप नहीं बनी। इसी प्रकार यह जगत् भी किसी-न-किसी के द्वारा बनाया गया है, न कि अपने आप बना।

इसलिए जब व्यक्ति ईश्वर की सत्ता को मानकर चलता है, तब वह अधिक लाभ प्राप्त करता है। जब नहीं मानता तो उस लाभ को प्राप्त नहीं कर पाता और जो कोई ईश्वर को नहीं मानता, इससे ईश्वर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और न ही परमेश्वर इतने मात्र से नाराज होता। अस्तु।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।

आरक्षण नहीं, वैदिक संरक्षण

- पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य

धधक रही है देश में, आरक्षण की आग।
अपने, अपनों पर रहे, यहाँ गोलियाँ दाग।।
यहाँ गोलियाँ दाग रहे, मानव अज्ञानी।
नेता तिकडम-बाज, कराते हैं शैतानी।।
भारत में दी बढा, फूट की अब बीमारी।
गए धर्म को भूल, स्वार्थी अत्याचारी।। १।।

नेताओं को लग गया, आरक्षण का रोग।
नर-नारी इस रोग का, भोग रहे हैं योग।।
भोग रहे हैं योग, दु:खी है जनता भारी।
दिन पर दिन बढ रही, भयंकर यह बीमारी।।
अगर रहा यह हाल, देश यह मिट जाएगा।
हमें सकल संसार, स्वार्थी बतलाएगा।। २।।

कुर्सी की खातिर रहे, नेता रोग बढ़ाय।
लालच में ये फंस गए, लालच बुरी बलाय।।
लालच बुरी बलाय, भूख वोटों की भारी।
इसीलिए तो पाप, रहे कर भ्रष्टाचारी।।
जन्म-जाति का रोग, बढ़ाते ही जाते हैं।
करते खोटे काम, तनिक ना शर्माते हैं।। ३।।

मदद गरीबों की करों, कहते चारों वेद।
धूर्तलोग समझें नहीं, यही हमें है खेद।।
यही हमें है खेद, धूर्त आदर पाते हैं।
बड़े-बड़े विद्वान्, यहाँ धक्के खाते हैं।।
हे मित्रों! यदि मान, जगत में चाहो पाना।
वेदों का सिद्धान्त, तुम्हें होगा अपनाना।। ४।।

गुरुकुलों में सब पढ़े, निर्धन अरु धनवान।
खान-पान-पहरान हो, सबका एक समान।।
सबका एक समान, व्यवस्था हो सरकारी।
पढ लिखकर सब बनें, तपस्वी-वेदाचारी।।
योग्यता अनुसार, काम सरकार उन्हें दे।
आरक्षण को मिटा, संरक्षण को अपना लें।।५।।

देव दयानन्द की अगर, शिक्षा लें सब मान।
हो जाएगा विश्व का, याद रखो! कल्याण।।
याद रखो कल्याण, साथियों! यदि तुम चाहो।
स्वयं आर्य बनो, विश्व को आर्य बनाओ।।
वैदिक पथ पर चलो, मार्ग है यह सुखदाई।
''नन्दलाल'' हो भला, आर्यो! करो भलाई।।६।।

आर्य सदन बहीन जनपद पलवल, हरियाणा।
चलभाष क्रमांक - ०९८१३८४५७७४

पुस्तक – समीक्षा

पुस्तक का नाम - सत्यार्थप्रकाश का व कशासाठी?
लेखक- माधव के देशपांडे
प्रकाशक- आर्य प्रकाशन, पिंपरी, पुणे-४११०१८
मूल्य- ६०/- **पृष्ठ संख्या**- ९३

सत्यार्थप्रकाश एक चर्चित ग्रन्थ है, जितना क्रान्तिकारी व्यक्तित्व स्वामी दयानन्द का है, उतने ही क्रान्तिकारी विचार उनके लिखे ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में है। यह ग्रन्थ जब प्रकाशित हुआ था, तब जितना चर्चित था, आज भी चर्चा में इस ग्रन्थ का उतना ही महत्त्व है। यह ग्रन्थ वैदिक सिद्धान्त मानने वाले के लिये बौद्धिकता की पराकाष्ठा प्रदान करता है, वहाँ विरोधी विचार वाले को बुद्धि का उपयोग करने के लिये बाध्य करता है।

भारत में हिन्दू धर्म में प्रचलित जितने मत-सम्प्रदाय हैं, उन सब में जितनी मान्यतायें, रूढि, अन्धविश्वास और पाखण्ड पर आधारित हैं, उन सबका तार्किक विश्लेषण इस ग्रन्थ में उपलब्ध है। जो विदेशी स्वयं पाखण्ड में फँसे हुये थे, परन्तु हिन्दुओं की मूर्खता पर हँसने में बड़प्पन समझते थे, उन विदेशी मतों में मुख्य रूप से ईसाइयत और इस्लाम की मिथ्या धारणाओं का भी तार्किक खण्डन इस ग्रन्थ के १३ वें और १४ वें समुल्लास में किया गया। ग्रन्थ की इस विवेचना के कारण ही क्रान्तिवीर सावरकर ने लिखा था- ''सत्यार्थ प्रकाश के रहते कोई विदेशी अपने मत की डींगें नहीं हाँक सकता।''

इस ग्रन्थ में तार्किक और न्याय संगत विचार होने के कारण जितने भी बुद्धिजीवी समाज में हुये, सबने मुक्तकण्ठ से इस ग्रन्थ की प्रशंसा की है। आर्य समाज और ऋषि दयानन्द के सम्पर्क में जो विद्वान् नेता, राजा-महाराजा आये, उन्होंने इस ग्रन्थ को पढ़ने की प्रेरणा सबको की।

दक्षिण में छत्रपति शाहू महाराज ने अपने विद्यालयों में सत्यार्थप्रकाश पढ़ाने की अनिवार्यता की थी। जोधपुर, उदयपुर राज्यों में भी ऋषि ग्रन्थों के पठन-पाठन की व्यवस्था अनेक स्थानों पर की गई। शाहपुराधीश नाहरसिंह वर्मा का शाहपुरा राज्य आर्य राज्य कहलाता था। यहाँ विद्यालयों में प्रतिदिन हवन होता था तथा विद्यालयों में ऋषि कृत ग्रन्थों के पठन-पाठन की व्यवस्था की गई थी।

इस ग्रन्थ की भाषा तार्किक होने के साथ दृढ़ता प्रदर्शित करती है, जिसके कारण जिन मत-मतान्तरों का इसमें खण्डन किया गयाहै, उनमें से कुछ लोगों ने इस पर आपत्ति की तो कुछ लोगों ने न्यायालय की शरण ली, परन्तु इस ग्रन्थ के पक्षपात रहित न्याय संगत तार्किक विचारों का सर्वत्र आदर किया गया। इस ग्रन्थ को पढ़ने के बाद मनुष्य की विचार करने की शक्ति जागृत हो जाती है। वह कुछ भी करने से पहले क्या, क्यों, कैसे, जैसे प्रश्नों पर उन विचारों को परखता है तभी अनुकूल होने पर स्वीकृति की ओर बढ़ता है।

ऋषि दयानन्द की ऐसी विशेषता है कि जो किसी प्रचलित गुरुओं के धर्मग्रन्थ हैं, उनमें दिखाई नहीं देती, कोई गुरु अपने शिष्य को उसकी परीक्षा करने का अधिकार नहीं देता, परन्तु ऋषि दयानन्द कहते हैं- मनुष्य को गुरु बनाने से पहले गुरु की ओर से पढ़े जाने वाले शास्त्र की परीक्षा अवश्य करनी चाहिए। गुरु का तो, शिष्य की परीक्षा का अधिकार था, परन्तु शिष्य को गुरु की परीक्षा करने का अधिकार ऋषि दयानन्द ही देते हैं। वे सत्यार्थ प्रकाश में परीक्षा के पाँच प्रकार भी बताते हैं। इसी कारण जहाँ अन्य गुरु अपने शिष्य को ज्ञान और विवेक का अधिकार नहीं देते, वहीं ऋषि दयानन्द शिष्य को ज्ञानवान् और विवेकी बनने की प्रेरणा करते हैं।

इस प्रकार जीवन के सभी क्षेत्र और सभी अवसर सत्यार्थप्रकाश के विचार क्षेत्र में आते हैं। मनुष्य के बाल्य से लेकर मृत्यु तक की अवधि हो या विविध ज्ञान-विज्ञान को समझने के अवसर हों, इसी कारण सत्यार्थप्रकाश के ७, ८, ९ वें समुल्लास में सम्पूर्ण दार्शनिक पक्ष प्रस्तुत किया गया है।

ऐसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ को मराठी भाषा में प्रश्नोत्तर शैली में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास श्री माधव देशपाण्डे ने किया है। श्री देशपाण्डे ने स्वयं और अपनी धर्मपत्नी और अपने बच्चों को इस ग्रन्थ के माध्यम से प्रबुद्ध बनाया है और अब वे समाज के युवाओं को भी इस उत्कृष्ट विचार से जोड़ना चाहते हैं। मैं इनके इस उत्तम प्रयास की प्रशंसा करता हूँ और ग्रन्थ के लोकप्रिय होने की कामना करता हूँ।

-डॉ. धर्मवीर

शैक्षणिक केरल यात्रा का वृत्तान्तः एक अविस्मरणीय अनुभव

- ब्र. वरुणदेवार्यः

सोमवता यागेनेष्टं भावयेत्। अर्थ संग्रह की यह पंक्ति व इसमें वर्णित सोमयाग का मीमांसा दर्शन के अध्येताओं के लिये विशेष महत्त्व है। इसी को ध्यान में रखते हुए आर्ष गुरुकुल ऋषि उद्यान अजमेर के विद्यार्थियों व आश्रमवासियों का एक दल केरल राज्य के पालाक्काड जिले में पेरुमुडियुर नामक स्थान पर हो रहे अग्निष्टोम नामक सोमयाग को देखने के लिए रवाना हुआ। ६ अप्रैल २०१६ सायंकाल गुरुकुल से प्रारंभ हुई यह यात्रा १६ अप्रैल २०१६ सायंकाल गुरुकुल में प्रवेश के साथ ही सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई। इस यात्रा का वृत्तान्त हर्ष मिश्रित आश्चर्य, रोमांच व अविस्मरणीय घटनाओं से भरपूर है।

हमारे दल के अधिकांश व्यक्ति प्रथम बार सुदूर दक्षिण में केरल प्रदेश को देखने जा रहे थे। वहाँ की तीव्र गर्मी व अत्यधिक उमस की जानकारी व भौगोलिक परिस्थितियों के पूर्वानुभव की सूचनार के पश्चात् भी ४८ घंटे की रेल यात्रा बिना किसी थकावट के उत्साह के साथ पूर्ण हुई। पट्टाम्बि रेलवे स्टेशन पर पहुँचते ही हमारे लिये बस की व्यवस्था श्री के.एन. राजन जी द्वारा की गई थी। वे एक सक्रिय आर्य केरल में आर्ष गरुकुल के संस्थापक व सेवानिवृत्त वायुसेना अधिकारी हैं। यात्रा समाप्ति तक इनका संकोच रहित सहयोग व हमारी सभी प्रकार की व्यवस्था के लिए तत्परता एवं आत्मीयता का भाव अविस्मणीय रहेगा। यहाँ पहुँचते ही हमारे दल को पुरुष व स्त्री दो वर्गों में विभाजित किया गया। महिला वर्ग के रहने की व्यवस्था याग स्थली पर व पुरुष वर्ग की आवास व्यवस्था लगभग ३ किमी. दूर पहाड़ी पर स्थित भगवती मन्दिर में की गई थी।

सायंकाल को पहुँचा हमारा पुरुष दल अगली प्रातः अभी ठीक से जागा भी नहीं था कि महिला दल की एक सदस्या के असावधानीवशात् उनके निवास आवास पर स्थित कूप में गिरने की सूचना मिली। दैवयोग से वे तैरना भी जानती थीं और यागस्थली के निकट होने से स्थानीय कार्यकर्त्ताओं की मदद से उन्हें सुरक्षित निकाल लिया गया। प्रथमे ग्रासे मक्षिकापतितः के अनुसार यह घटना उस क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थिति की द्योतक व सबके लिये सचेतक थी। पश्चात् सारा दिन सामान्य रहा।

प्रातःकाल याग स्थली पर सभी लोग एकत्रित हुए व ब्र. शक्तिनंदन जी ने जो योग विषय के अच्छे अनुभवी हैं हम सभी को योग संबंधित सभी प्रमुख जानकारियाँ भूमिचयन, यागशाला निर्माण आदि से लेकर शाला दहन तक का सविस्तार वर्णन किया। ऋत्विज्ञों से उनका पूर्व परिचय भी इसमें सहयोगी रहा। यज्ञ की व्यवस्था देख रहे लोगों के लिए 'राजस्थान' प्रान्त से आये ५० लोगों का दल गौरव का विषय था, अतः वे लोग भी समय-समय पर याग संबंधी जानकारी के लिए उपस्थित रहे। यात्रा के सामान्य नियमों के अनुसार यागशाला के चारों ओर कुछ दूरी पर रस्सी बाँध कर सामान्य जनों के प्रवेश को नियंत्रित किया जाता है, परन्तु उपरोक्त परिचय आदि के कारण हमारे कुछ साथियों को यागशाला प्रवेश व निकट से कर्मकाण्ड की रिकार्डिंग करने की अनुमति मिल गई। ऋत्विक् वरण आदि से प्रारंभ यज्ञ की ये विभिन्न क्रियाएँ सभी के लिए कौतूहल का विषय रहीं। नम्बूदरी ब्राह्मणों द्वारा किया जाने वाला सस्वर मन्त्रपाठ अद्‌भुत व आनन्ददायक था। विशेषतः यह कि याग के ब्रह्मा से लेकर यजमान तक सभी को संहिता मन्त्र सस्वर कण्ठस्थ थे और उनके प्रधान जो वैदिक नाम से कहे जाते हैं सारा समय उस सारी प्रक्रिया का गहनता से निरीक्षण करते रहे। किसी भी पद के अशुद्ध उच्चारण होने अथवा स्वर के च्युत होने पर तत्परता से उसे ठीक कराना व पूर्ण शुद्ध उच्चारण होने पर ही आगे बढ़ने देना उन लोगों की वेदों व कर्मकाण्ड के प्रति श्रद्धा का प्रतीक और हमारे लिये प्रेरणा का प्रतीक रहा। एक ऋत्विज से चर्चा करने पर पता चला कि सस्वर वेद मंत्रों का कण्ठस्थीकरण उन लोगों की परंपरा है व इस योग में प्रवेश से २ माह पूर्व से ही वे इस की तैयारी भी कर रहे थे तथा बिना देखे सस्वर वेदमन्त्रों को उपस्थित करने वाले ऋत्विजों को ही याग का अधिकार मिला है।

अगले दिनों में लगभग समान ही क्रियाएँ निरन्तरता से सुचारु रूप से बिना व्यवधान के चलती रहीं। याग स्थली के अति निकट एक और पाण्डाल में लगभग सारा दिन कुष्माण्ड याग चलता था। यह मुख्य याग का अंश न होकर स्थानीय लोगों की श्रद्धा की पूर्ति का प्रतीक था। इस कर्मकाण्ड में मूर्ति पूजा (विशेष शिवलिङ्ग पूजन) व चढ़ावे पर जोर रहा। इसके साथ वाले पाण्डाल में भोजन व्यवस्था की गई थी। इस पूरे कार्यक्रम की विशेषता वहाँ के स्वयंसेवक रहे जो दिन-रात यंत्रवत् मुस्काते हुए चेहरों से आगन्तुओं का स्वागत करते रहे। किसी भी स्वयंसेवक या संस्था के अधिकारियों को हमने कभी चिंतित या क्रोधित अथवा दु:खी नहीं देखा। संभवत: यह उनकी सुनिश्चित योजनाओं और समर्पण का ही परिणाम था। भोजन में हमें प्रत्येक समय अनिवार्य रूप से चावल और सांभर मिले। लस्सी उत्तर भारत के लोगों के लिये भोजन का महत्त्वपूर्ण अंग होती है। हमें वहाँ लस्सी मिली, परन्तु मात्र आचमन के तरीके से अंजुलि भर ही।

इस यात्रा के २ दिन स्थानीय आश्रमों, गुरुकुलों व मंदिरों के भ्रमण के लिये भी नियत किये गये थे। इनमें से प्रथम दिन हम बस द्वारा शंकराचार्य जी की जन्मभूमि तथा वहाँ बने मन्दिर देखने गये। यहाँ मन्दिर में आदि शंकराचार्य जी का जीवन चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। इसके निकट ही पूर्णा नदी है जो कथित रूप से मगर द्वारा आचार्य शंकर के पैर पकड़ने व संन्यास ग्रहण की साक्षी है। हमारे समूह ने भी उस नदी में अपने पद-प्रक्षालन का लाभ लिया। उस नदी के तट पर ही ऋग्वेद पाठशाला है। इसके साथ बने मन्दिर में हमने कुछ विद्यार्थियों को उच्चारणानुच्चारण विधि से मंत्रों का अभ्यास करते देखा। सुयोग्य गुरु के निरीक्षण में उनके शुद्ध उच्चारण आकर्षण का केन्द्र रहे। यहाँ से बस द्वारा हम गुरुवायुर मन्दिर देखने पहुँचे, परन्तु समय से न पहुँचने के कारण वहाँ निकट के संग्रहालय को देख व मन्दिर परिसर में भोजन कर आगे बढ़े। इस मन्दिर में केवल भारतीय परिधान-वह भी पुरुषों को केवल कटिवस्त्र में ही भोजन ग्रहण करने का नियम है।

अगले चरण में हम बस द्वारा ही कालीकट द्वीप (समुद्री तट) पर सांयकाल पहुँचे। समूह के अधिकांश लोगों ने प्रथम बार समुद्री स्नान का आनंद लिया। अथाह अनन्त जल राशि अपनी लहरों से मानो साक्षात् आमंत्रित कर रही हो-यह रोमांचकारी अहसास मानस पटल पर लंबे समय तक रहेगा। रात्रि होने तक हम कश्यप आश्रम पहुँच चुके थे। इस यात्रा में एक मनोरंजक घटना भी हुई। प्रतिदिन सोमयाग के ऋत्विकों के सस्वर मंत्रपाठ व शुद्धीकरण और संकेतक के रूप में किये जाने वाले हस्त संचालन के हम इतने अभ्यस्त हो चुके थे कि अनेक बार स्वयं भी वैसा अभिनय करने लगते। बस में भी भ्राता शक्तिनंदन जी (जो इस योग से संबंधित प्रक्रियाओं के सर्वाधिक ज्ञाता हैं) एक श्लोकोच्चारण कर रहे थे तो मेरे द्वारा टोकने पर चौंक पड़े और आश्चर्य मिश्रित प्रश्नवाचक दृष्टि से देखने लगे, पर जब मैंने स्वर संकेतक हस्त संचालन किया तो उन्हें भी समझते देर नहीं लगी कि यह केवल उनकी खिंचाई भर है और अन्य साथी भी हँसे बिना न रह सके।

कश्यप आश्रम पहुँचने पर हमारा स्वागत परंपरागत तरीके से दीप थाली आदि के माध्यम से हुआ। यह आश्रम श्री एन.आर. राजेश (आचार्य) जी द्वारा संचालित है। आप गुरुकुल काँगड़ी से स्नातकोत्तर स्तर तक शिक्षा प्राप्त हैं। आपके विदेश प्रवास के कारण अन्य सहयोगियों द्वारा चलचित्र के माध्यम से आश्रम की गतिविधियों का परिचय करवाया गया। वहाँ आचार्य सत्यजित् जी का उद्बोधन हुआ। प्रथम बार तुलसीदल की माला देखी जो आचार्य जी को अभिनन्दन के लिये पहनाई गई थी। (विदित हो कि तुलसी के तने की माला तो प्रसिद्ध है, परन्तु तुलसी दल (पत्तों)की नहीं।) यहाँ केरल की प्रथम महिला पुरोहित से मिलने का अवसर मिला। श्री एम.आर. राजेश जी के प्रयासों से केरल में ढाई लाख लोग प्रतिदिन उभय समय अग्निहोत्र करते हैं। इस जानकारी ने हमारे समूह में भी उत्साह का संचार किया। विशेष जानकारी इस सभा में यह प्राप्त हुई कि केरल प्रदेश की भाषा मलयालम में सत्य सनातन पुस्तक वेद का अर्थ होता है-बाइबिल, अत: जब एम.आर. राजेश (आचार्य) जी शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् अपने गृहस्थान पहुँचे और उन्होंने सभी को वेद पढ़ने के अपने

संकल्प से परिचित कराया तो लोगों में चर्चा प्रारंभ हुई कि एक और बाह्मण का लड़का ईसाई बन गया है। पर आचार्य राजेश जी ने इससे निराश हुए बगैर अत्यंत उत्साह से कार्य किया और वेद का वास्तविक स्वरूप लोगों के सम्मुख रखा और उन्हें अग्निहोत्रादि आदि के लिए तत्पर किया। इस क्रान्तिकारी कार्य के लिए आचार्य जी बधाई के व धन्यवाद के पात्र हैं। रात्रि भोजन वहीं किया। वहीं पहली बार केरल में गेहूँ की रोटी के दर्शन हुए।

वहाँ से चलकर लगभग मध्य रात्रि तक हम अपने आवास स्थलों पर पहुँचे। अगली प्रात: पुन: स्नानादि से निवृत्त होकर हम श्री के.एम. राजन जी द्वारा स्थापित व आचार्य वामदेव जी द्वारा संचालित गुरुकुल देखने गये। स्वस्तिवाचन के मंत्रों व पारंपरिक विधियों से स्वागत के पश्चात् यज्ञ किया गया। इस गुरुकुल में गौशाला के उद्घाटन का यह अवसर था। यहाँ सिंगापुर से पधारे आर्यों ने भी अपने विचार रखे। आचार्य श्री सत्यजित् जी का प्रेरक मार्गदर्शन गुरुकुल की व्यवस्था के संबंध में मिला। यह गुरुकुल नित्य उन्नति करे-ईश्वर से ऐसी प्रार्थना है। आचार्य वामदेव जी बहुत सक्रिय व जुझारू विद्वान् हैं।

अग्निहोत्र व ब्रह्मयज्ञ आदि सिखाने की कार्यशाला के आयोजन में लगभग २५ बालक-बालिकओं युवाओं व महिलाओं को प्रशिक्षण प्राप्त हुआ था। उसके प्रमाणपत्रों का वितरण भी स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी व आचार्य सत्यजित् जी द्वारा हुआ।

यहाँ से हम डॉ. शशिकुमार जी के निवास पर पहुँचे। डॉ. साहब आचार्य जी के सहपाठी रहे हैं व आयुर्वेद पंचकर्म के विख्यात चिकित्सक हैं। यहाँ उनकी रसायन शाला व चिकित्सालय को भी देखने व आयुर्वेद संबंधी बहुत-सी जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिला। परंपरागत वैद्यक का पक्षधर होने से उनके यहाँ अति प्राचीन दुर्लभ वैदक ग्रंथों को भी देखने का अवसर मिला।

यहाँ से कुछ दूरी पर स्थित स्वामी प्रणवानन्द जी के संरक्षण में चल रहे गुरुकुल को भी देखने का हमें अवसर मिला।

आर्ष गुरुकुल के निकट ही श्री राजन जी ने अपने निवास में एक पुस्तकालय निर्मित किया है, जिसमें आर्ष ग्रन्थों व सैद्धान्तिक मलयालम ग्रंथों को रखा गया है। यहाँ से दोपहर बाद तक हम लोग वापस याग स्थली लौट आये।

सोम याग में औषधि सोमलता का रस निचोड़कर उससे आहुति देने का विधान है। इस औषधि के अत्यन्त दुर्लभ होने से इसके विकल्प या प्रतिनिधि के रूप में पूतिक नामक वनस्पति का उपयोग किया जाता है। केरल में कहीं-कहीं यह सोमलता उपलब्ध हो जाती है। इस सोमयाग में वास्तविक सोमलता को ही लाया गया व प्रयोग किया गया। सोमरस निकालने के समय पढ़े जाने वाले मंत्रों का उच्चारण कर्त्ता ६ वर्ष की आयु का बालक नारायण था जो नियमपूर्वक एक साँस में सस्वर उन मंत्रों का पाठ करता था। मधुर स्वर से किये जाने वाले इस साहसिक पाठ के आनन्द का शब्दों द्वारा वर्णन नहीं किया जा सकता। अन्तिम दिन शाला दहन का कार्यक्रम था। सम्पूर्ण कर्मकाण्ड के अंत में यज्ञ-शाला मण्डप को अग्नि के हवाले कर दिया जाता है। इस कृत्य को देखने के लिये अपार जन-मानस उपस्थित था। सांयकाल शाला दहन के पश्चात् ही सभी वापस राजस्थान के लिये निकल पड़े। मलयालम में केर शब्द नारियल के लिये प्रयोग होता है और नारियल के वृक्षों की बहुतायत होने से ही संभवत: इस प्रदेश का नाम केरल है। ग्रन्थों में नारियल की तुलना सज्जनों से की जाती है और केरल के लोगों की सज्जनता का अनुभव हमने इस अष्ट दिवसीय प्रवास में निर्विवाद रूप से किया है। आज २ सप्ताह व्यतीत हो जाने पर भी याग व केरल के लोगों की आत्मीयता व सहयोग मन मस्तिष्क पर छाये हुए हैं। सच ही कहा है-

देशाटनं पण्डितमित्रता च वाराङ्गना राजसभा प्रवेश:।
अनेक शास्त्राणि विलोकितानि चातुर्यमूलानि भवन्ति पञ्च।।

ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।

जो खोटे काम करने वाला पुरुष अनेक प्रकार से अपने बल को उन्नति देकर सबको दु:ख देना चाहे, उसको राजा सब प्रकार से दण्ड दे। तो भी वह अपनी अन्यन्त खोटाइयों को न छोड़े तो उसको मार डाले अथवा नगर से इसको दूर निकाल बन्द रखे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४४

संस्था - समाचार

१६ से ३० अप्रैल २०१६

यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान आर्य जगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य का स्वाध्याय किया जाता है और तदनन्तर वेद प्रवचन होता है। रविवार प्रात:काल विशेष यज्ञ किया जाता है, जिसमें नगर निवासी आर्य सज्जन, माताएँ, बहनें और बच्चे सम्मिलित होते हैं और अपनी-अपनी आहुतियाँ प्रदान करते हैं। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और महर्षि दयानन्द जी द्वारा पूना में दिये गये प्रवचन 'उपदेश मञ्जरी' का पाठ एवं व्याख्यान होता है। शनिवार सायंकाल वानप्रस्थी साधक-साधिकाओं द्वारा प्रवचन किया जाता है। प्रत्येक रविवार को सायंकाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भजन, प्रवचन होता है। यहाँ पर व्याकरण, दर्शन, रचना-अनुवाद कौमुदी की कक्षायें निरन्तर चलती रहती हैं, जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ-साथ आश्रमवासी संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें और बाहर से आने वाले जिज्ञासु ज्ञान अर्जित करते रहते हैं।

यज्ञोपरान्त प्रात:कालीन प्रवचन में **आचार्य डॉ. धर्मवीर जी** ने अमेरिका यात्रा के प्रसंग में कहा कि ज्ञान प्राप्ति के अनेक साधनों में देशाटन का विशेष महत्त्व है। संस्कृत साहित्य में एक श्लोक है-देशाटनं पण्डितमित्रता च वाराङ्गना राजसभाप्रवेश: अनेक शास्त्राणिविलोकितानि चातुर्य मूलानि भवन्ति पञ्च। मनुष्य को व्यवहारिक समझ बढ़ाने के लिए पाँच बातें आवश्यक है। उनमें सबसे पहला है देश-देशान्तर में भ्रमण। जो व्यक्ति जितना अधिक भ्रमण करता है उसको उतना ही अधिक भाषाओं, स्थानों, लोगों के व्यवहार तथा चतुराई का ज्ञान और अनुभव होता है। यात्रा में कोई कष्ट या बाधा न हो तो वह स्मरणीय नहीं होती हैं। प्रामाणिक और विस्तृत जानकारी के लिये यात्रायें करने से विशेष लाभ होता है। कला-कौशल, चिकित्सा आदि के क्षेत्र में कार्य करने वालों की निकटता से ज्ञान बढ़ता है। समाज के सबसे निचले व्यक्ति से लेकर राजसभा के कर्मचारियों से मित्रता करने पर व्यवहार की कुशलता प्राप्त होती है। अनेक शास्त्रों के तुलनात्मक अध्ययन से उन शास्त्रों में विश्लेषण करने की क्षमता बढ़ती है। बहुत विद्वानों के व्याख्यान सुनने अर्थात् बहुश्रुत होने से भी ज्ञान में वृद्धि होती है। प्रतिभा, लोकशास्त्र, काव्यशास्त्र तथा अपने-अपने क्षेत्र या विषय की विशेष जानकारी रखने वालों के संग से ज्ञान बढ़ता है।

पूज्य आचार्य जी अमेरिका में बेंगलूर निवासी डॉ. सतीश शर्मा की बेटी का विवाह संस्कार वैदिक रीति से करवाने के लिए ओक्लाहोमा गये थे। डॉ. सतीश जी संस्कार की प्रत्येक क्रिया के बारे में वहाँ के गोरे लोगों के लिये अंग्रेजी भाषा में व्याख्या करते जाते थे। अमेरिका में धन कमाने के साथ-साथ पढ़ने-पढ़ाने की बहुत सुविधाएँ हैं। वहाँ बड़े-बड़े विश्वविद्यालय और अत्याधुनिक वातानुकूलित पुस्तकालय हैं। पूरे देश में अंग्रेजी भाषा का चलन है। कानून बहुत सख्त है। सड़क के नियमों का उल्लंघन करने पर भारी अर्थदंड, जेल एवं देश निष्कासन की सजा मिलती है। उस देश में अधिकांश लोग मांसाहारी हैं। गाय, बकरी, मुर्गी, सुअर आदि पशुओं का मांस खाने और खून पीने के कारण उन लोगों के स्वभाव में पशुता, क्रूरता स्पष्ट दिखाई देता है। शाकाहारी भोजन प्राय: भारतीय लोगों की बस्तियों में ही सुलभ होता है। वहाँ रहने वालों के लिये वाहन चलाने की योग्यता और निजी वाहन होना आवश्यक है। वहाँ के लोगों में मानवीय सम्बन्धों के प्रति संवेदना और आत्मीयता का अभाव है, रिश्तों की अपेक्षा डॉलर को अधिक महत्व देते हैं। ह्यूस्टन में नासा के मुख्य कार्यालय में अतंरिक्ष से लौटे हुए अंतरिक्षयान को देखा। अमेरिका का क्षेत्रफल भारत की अपेक्षा तीन गुना अधिक है लेकिन जनसंख्या भारत की अपेक्षा तीन गुना कम है। भारत में सूर्यास्त होने के लगभग एक घंटा बाद वहाँ सूर्योदय होता है।

भारत के गुरुकुलों से पढ़कर गये हुए स्नातक और कुछ विद्वान् अमेरिका में अच्छा काम कर रहे हैं। कुछ लोग यहाँ से वेद प्रचार और आर्य समाज का काम करने के लिये जाते हैं लेकिन वहाँ व्यापार आदि करने लग जाते हैं। श्री राजू जी, डॉ. सतीश जी और श्री धर्णे जी मिलकर वैदिक अनुसंधान ट्रस्ट का संचालन करते हैं। उस ट्रस्ट के माध्यम से यज्ञ से रोग निवारण, यज्ञ से वर्षा आदि विषयों पर अनेक प्रकार के खोज और प्रयोग कर रहे हैं। आर्य

समाज ह्यूस्टन में श्री रामचन्द्र महाजन के पुत्र श्री देव महाजन जी सब काम देखते हैं। ह्यूस्टन में आर्य समाज द्वारा विद्यालय भी संचालित होता है। वहाँ नेपाल के डॉ. वीरदेव विष्ट जी पारिवारिक यज्ञ करवाते हैं, सामुदायिक भवनों, चर्च आदि में अंग्रेजी भाषा में वैदिक सिद्धान्तों और भारतीय ऋषियों के दर्शनों पर व्याख्यान करते हैं। विश्वविद्यालयों से उच्च शिक्षा प्राप्त श्री हरिश्चन्द्र जी व्यक्तिगत खर्च कर विभिन्न देशों में जाते हैं, वहाँ के नास्तिक बुद्धजीवियों, वैज्ञानिकों में आर्य समाज और वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार करते हैं। लोस एँजिल्स, अटलाण्टा, शिकागो आदि स्थानों पर आर्य समाजें अच्छा काम रही हैं। डॉ. दीनबन्धु चंदोरा, पं. वेदश्रमी, पं. सूर्यकुमार नंद एवं अन्य विद्वान् अमेरिकावासियों को वैदिक जीवन पद्धति तथा ईश्वर उपासना सिखा रहे हैं। वहाँ स्वामी सत्यप्रकाश जी के प्रचार का भी बहुत प्रभाव है। अमेरिका में आर्य समाज भवनों की अपेक्षा हिन्दू संगठनों के सामुदायिक भवन और मन्दिर अधिक हैं।

प्रात:कालीन सत्संग में परोपकारिणी सभा के मन्त्री **श्री ओममुनि जी** ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने अपने गुरु को गुरुदक्षिणा के रूप में पूरा जीवन सत्य के प्रचार करने का वचन दिया और उसके पालन में अपना पूरा जीवन लगा दिया। हम लोग आर्यसमाज से जुड़कर अपने परिवार और अन्य लोगों को भी वैदिक विचारधारा से जोड़ें। परिवार में यज्ञ, संध्योपासना, वेद शास्त्रों का स्वाध्याय केवल पुरुषों तक सीमित रहने पर अगली पीढ़ी आर्यसमाज और वैदिक विचारधारा से नहीं जुड़ पाती, इसलिये परिवार की महिलाओं और बच्चों को यज्ञ, वैदिक संस्कार सिखाना और आर्यसमाज से जोड़ना आवश्यक है। आर्यसमाजी परिवारों में दैनिक यज्ञ होना चाहिये। आर्यसमाजों के अधिकांश अधिकारी और सदस्य बूढ़े हो चुके हैं। युवक-युवतियाँ और बच्चे अधिक से अधिक संख्या में समाजों में कैसे आये? इस विषय पर हम सबको विचार करना चाहिये। श्री राजेन्द्र जिज्ञासु के युवा सहयोगी श्री लक्ष्मण जिज्ञासु द्वारा लगभग ५०० युवाओं की टीम वाट्स एप और फेसबुक से जुड़कर वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार पूरे विश्व में कर रहे हैं। उन युवाओं का सम्मेलन ऋषि उद्यान में करने की योजना है, क्योंकि युवा ही समाज और देश का आधार हैं।

रविवारीय प्रात:कालीन सत्संग में श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य जी ने योग विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि सब दुखों से छूटने और ईश्वर प्राप्ति का सीधा तथा सरल उपाय योग ही है। योग का पहला और दूसरा अंग यम, नियम सार्वभौमिक मानव धर्म तथा वैदिक सदाचार है। यम नियम के पालन से व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय चरित्र का विकास होता है। इनका पालन करके कोई भी मनुष्य निरोग रहते हुए सौ वर्ष तथा उससे अधिक समय तक सुखी जीवन जी सकता है। वर्तमान में योग का व्यवसायीकरण होने के कारण योग विश्व में फैल गया है। देश-विदेश में बड़े-बड़े योग शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। अधिकांश नगरों, महानगरों में आसन, प्राणायाम प्रशिक्षण के अनेक केन्द्र चल रहे हैं। जो केवल शारीरिक और बौद्धिक विकास पर ही ध्यान देते हैं, आत्मिक विकास पर नहीं। ये संस्थायें यम-नियम के पालन को महत्त्व नहीं देते हैं। योग की मूल भावना चरित्र निर्माण को छोड़ दिया है। आज से पचास वर्ष पूर्व आर्यसमाज के विद्वानों ने योग के प्रचार के लिये बहुत कार्य किया। अजमेर निवासी आचार्य भद्रसेन जी, स्वामी ओमानन्द, आचार्य भगवान देव टंकारा वाले, स्वामी जगदीश्वरानन्द जी प्राकृतिक चिकित्सक, पं. जगत कुमार जी शास्त्री, स्वामी विष्वङ्ग परिव्राजक एवं अन्य विद्वानों ने आम आदमी के समझने योग्य सरल भाषा में आसन-प्राणायाम पर अनेक ग्रन्थों की रचना की। **यम नियम के पालन के बिना योगपथ पर कोई भी आगे नहीं बढ़ सकता, न ही कोई सिद्धि प्राप्त कर सकता है।** वेदों का स्वाध्याय करना योगमार्ग में आगे बढ़ने का एक महत्वपूर्ण साधन है। मानव मात्र का कल्याण योगमार्ग पर चलने से ही हो सकता है।

गुरुकुल ओम शांतिधाम बैंगलूर से पधारे **ब्र. कश्यप जी** एवं **ब्र. सुहाष जी** ने ऋग्वेद का सस्वर पाठ सुनाया। उस गुरुकुल में ऋग्वेद को स्वर सहित कण्ठस्थ कराया जाता है। वहाँ मन्त्रों को संहिता पाठ, पद पाठ, क्रम पाठ, शिखा पाठ, जटा पाठ, माला पाठ, घन पाठ आदि विकृत पाठ के रूप में अभ्यास कराने की परम्परा है। जिससे वेदों की पूर्ण रूप से रक्षा हो सके। वेद मन्त्रों में मिलावट को विकृत पाठ से तत्काल जान सकते हैं। वर्तमान में दक्षिण भारत के गुरुकुलों में स्वर सहित मन्त्र पाठ की दो पद्धतियाँ प्रचलित है-शृंगेरी पद्धति और महाराष्ट्रियन पद्धति। दोनों पद्धतियों में स्वर तथा लय का कुछ अन्तर है।

सायंकालीन सत्संग में उपदेश मंजरी पुस्तक पर चर्चा के क्रम में **उपाचार्य श्री सत्येन्द्र जी** ने ऋग्वेद के मन्त्र

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् .... की व्याख्या करते हुए बताया कि स्वामी दयानन्द जी वेदोक्त वर्ण तथा आश्रम व्यवस्था का समर्थन और प्रचार करते थे।

विशिष्ट व्यक्तित्व:- ३० अप्रैल शनिवार को परोपकारिणी सभा के कोषाध्यक्ष श्री सुभाष नवाल जी के पिता **श्री मथुरा प्रसाद नवाल जी** का जन्मदिन ऋषि उद्यान में हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। उनके परिवार के सभी सदस्य व मित्रगण उपस्थित रहे। श्री नवाल जी परोपकारिणी सभा के लिए कई वर्षों से तन, मन, धन से उदारतापूर्वक समर्पित होकर कार्य कर रहे हैं।

*** डॉ. धर्मवीर जी की अमेरिका प्रचार यात्रा:-**

(क) १० मार्च डॉलस

(ख) ११-१४ मार्च २०१६ -ओक्लाहोमा में विवाह संस्कार

(ग) १५ मार्च २०१६ -डॉलस में पारिवारिक सत्संग

(घ) १६ -२२ मार्च २०१६ -आर्यसमाज ह्यूस्टन में उपासना का महत्त्व वैदिक संस्कार, ईश्वर का सत्यस्वरूप, आर्यसमाज की नए लोगों के बीच में स्वीकार्यता कैसे हो? और वैदिक साहित्य का महत्व इत्यादि विषयों पर व्याख्यान।

(ङ) २२-३१ मार्च २०१६ - सनीवेल में जन सम्पर्क

(च) ०१ अप्रैल २०१६- शिकागो में पारिवारिक सत्संग

(छ) ०२ अप्रैल २०१६ - शिकागो में क्रियायोग से सम्बन्धित संस्थाओं में चर्चा

(ज) ०३ अप्रैल २०१६ - आर्यसमाज शिकागो में धर्म चर्चा

(झ) ०७ अप्रैल २०१६ - आर्यसमाज अटलाण्टा में ''संस्कारों की आवश्यकता'' पर व्याख्यान

(ञ) ०८ अप्रैल २०१६ - श्री वेदश्रमी जी के निवास पर नववर्ष के उपलक्ष्य पर यज्ञ एवं सत्संग, श्री दीनबन्धु चन्दोरा जी के घर पारिवारिक सत्संग।

(ट) ०९ अप्रैल २०१६ - आर्यसमाज अटलाण्टा में सत्संग-११-४ बजे तक तेलगू समाज में दार्शनिक विषयों पर शंका-समाधान

(ठ) १० अप्रैल २०१६ - श्री दीन बन्धु चन्दोरा जी के साथ आर्यसमाज विषय पर चर्चा।

(ड) ११ अप्रैल २०१६ - गुरुकुल स्नातक श्री वीरदेव जी विस्ट के घर यज्ञ एवं सत्संग।

-डॉ. ब्रह्मदत्त चन्दौरा जी के घर शाकाहार विषय पर पारिवारिक चर्चा।

-पं. गिरी जी के घर पर यज्ञ एवं सत्संग।

(ढ) १२ अप्रैल २०१६ - श्रीमती लूथरा के घर पारिवारिक सत्संग।

-श्री भारत सोमल जी के घर विचार-विमर्श।

(ण) १३ अप्रैल २०१६ -सान्ता बारबरा की यात्रा

(त) १५ अप्रैल २०१६ -सान्ता मोनिका भ्रमण

(थ) १६ अप्रैल २०१६ -श्री सुरेन्द्र मेहता एवं श्रीमती वीना मेहता के घर पारिवारिक सत्संग

(द) १७ अप्रैल २०१६ -आर्यसमाज लोस ऐंजिल्स में ''वेदों की महत्ता'' पर व्याख्यान

(ध) २३ अप्रैल २०१६ -सेन फ्रांसिस्को।

*** आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम:-**

(क) ०७ मई २०१६ -आर्यसमाज धोलेडा, महेन्द्रगढ़, हरियाणा के वार्षिकोत्सव में व्याख्यान

(ख) ०८ मई २०१६ -ग्राम टीटोली, रोहतक में श्री रामचन्द्र जी ठेकेदार के पौत्र का नामकरण संस्कार।

(ग) ११-१३ मई २०१६ -आर्यसमाज सहागंज, जौनपुर, उ०प्र० के वार्षिकोत्सव में मुख्य वक्ता।

(घ) १४-१७ मई २०१६ -आर्यसमाज कण्डाघाट, हिमाचल प्रदेश के वार्षिकोत्सव में मुख्य वक्ता।

(ङ) २०-२२ मई २०१६ -गाजियाबाद

(च) २५-३१ मई २०१६ -आर्यसमाज मलाखा चौड, सवाई माधोपुर के वार्षिकोत्सव में व्याख्यान।

***आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार:-**

(क) ०१ मई २०१६ -श्री इश्मपाल जी आर्य, सीडकी, सहारनपुर में पारिवारिक यज्ञ एवं सत्संग।

(ख) ०२ मई २०१६ -श्री रोशन जी आर्य, गांगनौली, सहारनपुर में पारिवारिक यज्ञ एवं सत्संग।

-आर्यसमाज रूहालकी, हरिद्वार में सत्संग

(ग) ०३ मई २०१६ - श्री ओमपाल सिंह जी (सेवानिवृत्त सैनिक) रुड़की हरिद्वार के जन्मदिवस पर यज्ञ सत्संग ।

(घ) १०-१२ मई २०१६ -डॉ. मित्तल, जयपुर के परिवार में सामवेद पारायण यज्ञ एवं वेदपाठी श्री प्रभाकर आर्य

(ङ) १५-३१ मई २०१६ -संत निर्भयनाथ उच्च माध्यमिक विद्यालय बीकानेर में युवा निर्माण शिविर में प्रशिक्षक की भूमिका में।

सुगन्धित वैदिक मुस्कान

दिवंगत यतिवर आचार्य बलदेव जी महाराज

- डॉ. सारस्वती 'मोहन मनीषी'

निश्चल मन के देवोपम इन्सान थे, नैष्ठिक जी।
यज्ञव्रती दृढ़ संकल्पों की शान थे, नैष्ठिक जी।।
गुरुवर दयानन्द को राम मानकर कार्य किया।
आर्य जाति के सरल-सहज हनुमान थे, नैष्ठिक जी।।
खण्डन-मण्डन नहीं सिर्फ मण्डन करना जाना।
अभिशप्तों के लिए सतत वरदान थे, नैष्ठिक जी।।
अपनी चिन्ता छोड़ दूसरों को निश्चिन्त किया।
अपमानों के बीच खड़े सम्मान थे, नैष्ठिक जी।।
सदा रहे विजयेन्द्र निराशा पास न आने दी।
आशाओं के केन्द्र विरल कप्तान थे, नैष्ठिक जी।।
कहूँ आधुनिक कृष्ण आपको तो भी कम ही है,
गौमाता के लिए सतत अभियान थे, नैष्ठिक जी।।
दयानन्द की फुलवारी में सदा बसन्त रहे।
इस चिन्ता में अस्त हुए दिनमान थे, नैष्ठिक जी।।
एक नहीं अगणित शिष्यों से मिलकर यह जाना।
अद्भुत ऊहा के अनुपम विद्वान् थे, नैष्ठिक जी।।
मिथ्या भाषण कभी न भाया सदा सत्य गाया।
शुद्ध सुगन्धों की वैदिक मुस्कान थे, नैष्ठिक जी।।
यतियों के भी यती-जती सागर मीठे जल के।
आने वाले संकट के अनुमान थे, नैष्ठिक जी।।
पाखण्डों की पीठ टिकाने में न रहे पीछे।
आल्हा ऊदल वीर मर्द मलखान थे, नैष्ठिक जी।।
पुनः व्याकरण सूर्य अस्त हो लगे ऐसा।
शिष्यों हित गुरुकुल में गंगा स्नान थे, नैष्ठिक जी।।
धीरे-धीरे कंचन काया की छीजी माया।
किसे पता था कुछ दिन के महमान थे, नैष्ठिक जी।।
नमन आर्य आचार्य सन्त बलदेव सजल मन से।
अश्रु कह रहे कितने अधिक महान् थे, नैष्ठिक जी।।
सभी मनीषी, मिलकर अब एकत्व राग गायें।
सदा सुनाई देगी ऐसी तान थे, नैष्ठिक जी।।

- रोहिणी, दिल्ली

मत्कृते कथं न?

- डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री

सात्त्विकं कर्म कर्त्तुं च वक्तुं हितम्,
धर्म-कार्ये समाह्वातुम् एवं मुदा।
शब्द-शास्त्रे त्वदीये परं हे! प्रभो!
मृत्कृते नो द्वितीया विभक्तिः कथम्?

केन वृद्धास्तथा मातरः सेविताः?
केन पुत्राः समाजे सुखं वर्धिताः?
उत्तरं प्राप्तुमत्र प्रभो! निश्चितम्,
मत्कृते नो तृतीया विभक्तिः कथम्?।।

निर्बलोऽहं विभो! निर्धनोऽहं प्रभो!
संस्तुवे नामधेयं सदा ते परम्।
शब्द - शास्त्रे त्वदीये जगन्नाथ! हे!
मत्कृते नो चतुर्थी विभक्तिः कथम्?।।

दुर्जनाश्चाऽथ कस्मात् खला बिभ्यति?
संस्कृतं चाऽपि कस्मादधीते जनः?
शब्द-शास्त्रे तदस्योत्तरे हे! प्रभो!
मत्कृते पञ्चमी नो विभक्तिः कथम्?।।

काव्य-सौन्दर्यमेतत् भवेत् कस्य भो!
वाक्य-माधुर्यमेतत् मतं कस्य वा?।
शब्द-शास्त्रे त्वहो! सच्चिदानन्द ते,
किं न षष्ठी विभक्तिर्भवेत् मत्कृते?।।

कुत्र भक्तिश्च विश्वास आस्था प्रभो!
त्वाम्प्रति श्रद्धया वा मनः संस्थितम्।
शब्दे-शास्त्रे त्वदीये तदस्योत्तरे,
मत्कृते सप्तमी नो विभक्तिः कथम्?।।

- बी-२९, आनन्द नगर, जेल रोड,
रायबरेली-२२९००१

स्तुता मया वरदा वेदमाता-३४

उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः

ऋग्वेद के दशम मण्डल में एक सौ सैतीसवाँ सूक्त हे। इसमें सात मन्त्र है। इन मन्त्रों के ऋषि के रूप में सप्तर्षयः ऐसा उल्लेख है। इस का अभिप्राय है- प्रत्येक ऋचा का एक-एक ऋषि है। सप्तर्षयः कहने से सात ऋषियों का गहण होता है। वैदिक साहित्य से सप्त ऋषय कहने से पाँच प्राण और अहंकार महत का ग्रहण है, कही सप्त ऋषि, पञ्चप्राण, सूत्रात्मा, धनञ्जय का उल्लेख है। सप्तर्षयः सूर्य की रश्मियों का नान भी है। पाँच इन्द्रियों के साथ मन और विद्या को भी सप्तर्षयः कहा गया। मन्त्र के देवता के रूप में विश्वेदेवाः कहा गया है। यहाँ देवा, विद्वान्सः विद्वान् समझदार, बड़े लोगों का ग्रहण किया जाता है। इन्द्रियों के लिये भी देव शब्द का उपयोग किया गया है।

इस पूरे सूक्त में मनुष्य जीवन के लिये आवश्यक बातों का उल्लेख किया गया। मनुष्य जड़ चेतन का संयोग है। चेतन आत्मा तो स्वरूप से अनादि है, उसके स्वभाव में, स्वरूप में कोई परिवर्तन कभी नहीं होता। शरीर का भौतिक स्वरूप दो प्रकार का है, एक स्थूल तथा दूसरा सूक्ष्म। जो पदार्थ जितना स्थूल होगा, उसका स्वरूप उतना ही अधिक परिवर्तनशील होगा। दूसरे शब्दों में उसका नाश उतना ही शीघ्र होगा। भौतिक पदार्थों में स्थूल शरीर तो बहुत शीघ्र नष्ट हो जाता है, परन्तु मन, बुद्धि, इन्द्रियाँ, भौतिक होने पर भी सूक्ष्म होने के कारण इनकी अवधी पूरी सृष्टि के काल तक है।

संसार यात्रा स्थल है। यात्रा का लक्ष्य आत्म साक्षात्कार है। इसके साधन स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर है। **बाह्यजगत् की यात्रा स्थूल शरीर से होती है** और **अन्तर्जगत् की यात्रा मन, बुद्धि से या सूक्ष्म शरीर से होती है।** स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और जीवात्मा मिलकर एक इकाई बनती है, जिसे शास्त्र में **आत्मेन्द्रिय मनोभुक्तं भोक्ते, यादुर्मजीषीणः** कहा है। आत्मा इन्द्रिय मन जब संसार से जुड़ते हैं, तब आत्मा की सेता भोक्ता होती है, तब वह संसार का उपभोग करने में समर्थ होता है। केवल चेतन आत्मा संसार का साक्षात्कार नहीं कर सकता है। केवल सूक्ष्म शरीर के साथ भी संसार के सम्पर्क में नहीं आ सकता। **संसार की यात्रा स्थूल शरीर से होती है।** मुक्ति की यात्रा सूक्ष्म शरीर से होती है। ये दोनों ही साधन स्वस्थ, समर्थ होने चाहिए। इसलिये इस सूक्त में दोनों को स्वस्थ रखने की बात कही गई है।

जब-जब मनुष्य अनुचित विचारों के सम्पर्क में आता है, तब-तब उसका मानसिक पतन होता है। मानसिक पतन का कारण यदि बुरे विचार हैं, तो मानसिक स्वास्थ्य के लिये अच्छे विचारों का विकल्प चाहिए। **वैद्य मन और शरीर दोनों की चिकित्सा करता है।** वात, पित, कफ से शरीर चिकित्सा की जाती है। रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण के ज्ञान से मानस चिकित्सा की जाती है। शरीर की चिकित्सा के लिये परमेश्वर की प्रार्थना और औषधियों का युक्तिपूर्वक सेवन करना, स्वस्थ होने का उपाय है, तो मन के स्वास्थ्य के लिये शास्त्र कहता है- **ज्ञान विज्ञान धैर्य स्मृति समाधिर्भिः।** ज्ञान आत्मा के विषय में जानना, विज्ञान शास्त्र का जानना, धैर्य, धीरता, स्मरण शक्ति, समाधि, एकाग्रता, इन बातों से मन के रोगों की चिकित्सा की जाती है। यह चिकित्सा विद्वान् वैद्य के बिना सम्भव नहीं होती।

मन और शरीर दोनों भौतिक हैं, इस कारण एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। शरीर में रोग, असमर्थता होने पर मन में निराशा, अनुत्साह होने लगता है। मन में खिन्नता होती है। मानसिक दुःख होता है, तब उसका प्रभाव शरीर पर होने लगता है। मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिये शरीर, आत्मा दोनों का ध्यान रखना पड़ता है। हम केवल शरीर की चिन्ता करें और मन को स्वस्थ रखने का उपाय न करें, तो मनुष्य के अन्दर राग, द्वेष,

ईर्ष्या, काम, क्रोध आदि की भावनाएँ बढ़ने लगती हैं। इसको केवल शरीर के उपायों से नियन्त्रित नहीं किया जा सकता। मनुष्य काम, क्रोध से राग द्वेष में पड़ जाता है, तो उसकी भूख और नींद समाप्त होने लगती है, शरीर रोगी होने लगता है। मानसिक रोगों का मूल कारण स्वार्थ है। मानसिक स्वास्थ्य का प्रमुख उपाय परोपकार है। जो मनुष्य स्वार्थी है, वह कभी भी स्वस्थ नहीं हो सकता, परोपकारी व्यक्ति कभी दु:खी नहीं होता। स्वार्थी व्यक्ति किसी बात को करने के लिये, किसी वस्तु को पाने के लिये अनुचित विचारों की सहायता लेता ही है, उसके न मिलने की आशंका से भय, ईर्ष्या, द्वेष स्वाभाविक रूप से बनते हैं। इसलिये मनुष्य को प्रतिदिन शरीर के स्वास्थ्य के उपायों के साथ-साथ मानसिक उपाय का प्रयास करना चाहिए।

मनुष्य के मन में रजोगुण बढ़ता है, तो मन चंचल और रागद्वेष से युक्त होता है। परोपकार और उपासना से मन में सतोगुण की वृद्धि होती है। देव लोग पतित मनुष्य को भी इन उपायों से उठा देते हैं, मानसिक रूप से स्वस्थ कर देते हैं।

क्रमशः .....

प्रतिक्रिया

१. आदरणीय सम्पादक महोदय,

गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ में आपका जनवरी अंक पढ़ने को मिला, जिसमें असहिष्णुता पर अपका लेख पढ़कर अपार प्रसन्नता हुई। इस वातावरण में किसी सम्पादक द्वारा ऐसी निष्पक्ष व राष्ट्रीय पत्रकारिता से परिपूर्ण लेख व खबर अब कम देखने को मिलती हैं। मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी ऐसे सम्पादकीय आपकी पत्रिका के माध्यम से हमें पढ़ने को मिलेंगे। पुन: आपके इस सम्पादकीय के लिये मेरी ओर से धन्यवाद।

- नीरज कुमार, पुराना रामलीला मैदान, मुरादनगर, जि. गाजियाबाद, उ.प्र.

२. आदरणीय डॉ. धर्मवीर जी, सादर नमस्ते

आशा है आप स्वस्थ सानन्द होंगे। सन् १९८३ के बाद पिछले माह अजमेर ऋषि उद्यान आने का सौभाग्य मिला। अपने तीर्थ को इतने विशाल भव्य-दिव्य स्वरूप में देख कर अतीव प्रसन्नता हुई। आपने विश्व भर में घूम-घूम कर अपने अप्रतिम वैदुष्य से ऋषि का जो सन्देश फैलाया, उस सन्देश की यश सुगन्ध ऋषि उद्यान में प्रवेश करते ही बरबस अपनी ओर वेद प्रेमियों - ऋषि भक्तों को खींच रही है। मोहक यज्ञशाला, सुखद आवास और भोजन व्यवस्था, स्वस्थ दुधारू गौएँ, विशाल भवन, ऋषि स्मृति भवन इत्यादि सभी बहुत प्रशंसीय है। मेरा आपके सद्प्रयासों को नमन। आप स्वस्थ्य, दीर्घ आयु हों। आपने जीवन की सार्थकता को सिद्ध ही नहीं किया अपितु प्रेरणा के लिए पुण्य-पथ भी प्रशस्त किया है।

- डॉ. रामप्रकाश शर्मा, सी-४-३३१, प्रथम तल, सैक्टर-६, रोहिणी, दिल्ली

3. Namastey, It was a knowledge filled day at Smt. Kamala and Shri Suresh's residence. Knowledge was flowing like Ganga and we were sailing on Vedic boat with the Vedic Scholar Acharya Dharm Veer Ji taking us from place to place like a captain of the ship. We tried asking different questions and deviate him like wind blowing the sail and taking the boat in different directions. But with the excellent knowledge and logic, Acharya Ji navigated the ship to shore with joy filled hearts and minds. Thanks to Vedic Temple and their devotees for providing us with opportunity to avail the lectures and analysis of such a great scholar as Acharya Dharm Veet Ji. Vedas World inc thanks all those who attended the session and made it wonderful.

Venkata R Chaganti,
- Vishrut

आर्यजगत् के समाचार

१. प्रवेश प्रारम्भ- योगीराज श्री कृष्ण की जन्मस्थली एवं युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की दीक्षास्थली पवित्र ब्रज भूमि मथुरा में प्रखर राष्ट्रभक्त महाराजा श्री महेन्द्र प्रताप द्वारा प्रदत्त सुविस्तृत भूखण्ड में स्थित श्रद्धेय नारायण स्वामी जी की तपस्थली गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही विद्यार्थी को कक्षा ६ एवं ७ में योग्यता अनुसार प्रवेश दिया जा सकता है अथवा जिस विद्यार्थी को अन्य विषयों के साथ अष्टाध्यायी न्यूनतम ४ अध्याय कण्ठस्थ होगी, वह विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर कक्षा ८ में भी प्रवेश पा सकता है। गुरुकुल में प्राच्य व्याकरण के साथ-साथ अन्य सभी विषयों का भी गहनता से अध्ययन कराया जाता है। अत: विद्यार्थी का मेधावी होना आवश्यक है, इसलिए अभिभावक मेधावी, सुशील विद्यार्थी को ही प्रवेशार्थ लायें। **सम्पर्क**- **आचार्य हरिप्रकाश**- **०९४५७३३३४२५**

२. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- आर्य समाज रामनगर, खटकरी सीतापुर का तीसरा वार्षिकोत्सव दि. १३ से १५ अप्रैल २०१६ को धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ, भजन व प्रवचन, विभिन्न सम्मेलन हुए। सहारनपुर से पधारे पं. शिवकुमार शास्त्री द्वारा श्रीराम के जीवन पर प्रवचन हुए, मुजफ्फरनगर से पधारे पं. घनश्याम प्रेमी के क्रान्तिकारी व सामयिक गीत हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के सदस्य चौ. रणवीरसिंह की उपस्थिति में आयोजित इस कार्यक्रम में उन्होंने प्रधान श्री दर्शनलाल व कार्यकर्त्ताओं को बधाई देते हुए घोषणा की कि दि. ७ से १० जून २०१६ को भिवाली में आर्य समाज के शिविर में अधिक से अधिक लोग भाग लें।

वार्षिकोत्सव मनाया- जनक नन्दिनी सीता की जन्मस्थली नेपाल की सीमा के पास ग्राम सरसौला खुर्द में आर्ष गुरुकुल १९९५ से संचालित है। इस आर्य समाज का २५वाँ वार्षिकोत्सव ७ से १० अप्रैल २०१६ तक धूमधाम से मनाया गया, जिसमें होशंगाबाद म.प्र. के आचार्य श्री आनन्द पुरुषार्थी मुख्य उपदेशक व भजनोपदेशक के रूप में पं. श्री प्रमोद आर्य कासगंज उ.प्र. थे। कुल १० सत्रों में कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम में श्री संजय गुप्ता का योगदान रहा, मंच संचालन आर्य समाज के प्रधान श्री राजन भास्कर ने किया।

सम्मानित- श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट, नागपुर द्वारा कॉन्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ इण्डिया मावलंकर ऑडीटोरियम, नई दिल्ली में ९ अप्रैल २०१६ को आयोजित सम्मान व पुरस्कार समारोह में बालिकाओं को सुशिक्षित व संस्कारित करने में जुटी आर्यजगत् की **आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा**, पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी, आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज राजस्थान को **आर्यरत्न सम्मान से सम्मानित** एवं **अनूचान साहित्य पुरस्कार** से पुरस्कृत किया गया। यह सम्मान व पुरस्कार मान्य वी.के. सिंह रिटायर्ड जनरल विदेश राज्य मन्त्री भारत सरकार, मान्य डॉ. हर्षवर्धन, केन्द्रिय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मन्त्री भारत सरकार के परोक्ष आशीर्वाद एवं मान्य श्री सत्यपालसिंह जी, लोकसभा सदस्य, भारत सरकार के सान्निध्य में श्री स्वामी सुमेधानन्द जी लोकसभा सदस्य द्वारा १०१०००/- रु. का चेक, स्मृति चिह्न, सम्मान पत्र दिया गया तथा राव परिवार की बहनों द्वारा शॉल, श्रीफल व पुष्पमाला द्वारा सम्मान किया गया। ट्रस्ट अनेक वर्षों से विद्वानों को सम्मानित करता आ रहा है, इस बार **आर्य रत्न एक लाख एक हजार, आर्य विभूषण इक्यावन हजार, आर्य गौरव इक्कीस हजार,** ये तीन सम्मान व पुरस्कार ९ आर्य विद्वानों को दिए गये।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न- आर्य समाज भिडीयाखेडी, जि. पर्सा में विगत ३७ वर्षों से यज्ञ प्रवचन सत्संग का कार्य हो रहा है। ग्राम के मुखिया श्री नथुनी प्रसाद आर्य ने आर्य समाज मन्दिर के लिए कुछ भूमि दान की। यह स्थान भारत की सीमा से लगभग ३ किलोमीटर दूरी पर है। १० से १५ अप्रैल २०१६ तक शोभा यात्रा, वेद प्रचार, पुस्तक विक्रय, भजन, प्रवचन आदि हुए। मुख्य उपदेशकों में भजन गायिका पंडिता श्रीमती अमृता-मंगोलपुरी दिल्ली, आचार्य आनन्द पुरुषार्थी-होशंगाबाद, पं. अमरदेव-बिहार,

श्री रामचन्द्रसिंह-नेपाल, श्री बलबीर-रोहतक, श्री ज्ञानचन्द-नेपाल रहे। मंच संचालन श्री विश्वनाथ आर्य ने किया। १०१ यजमान दम्पत्तियों द्वारा यज्ञ किया गया। आचार्य जी ने २० से २२ अक्टूबर २०१६ को काठमांडू में आयोजित होने वाले आर्य महा सम्मेलन के लिये आमन्त्रित किया।

शिविर का आयोजन- सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर जम्मू शहर में दि. ५ से १२ जून २०१६ तक लगाया जाएगा। इसमें भाग लेने के लिए १४ वर्ष से अधिक आयु की वो वीरांगनाएँ, जिन्होंने पहले भी कम-से-कम दो शिविरों में भाग लिया हो, आ सकती हैं। सम्पर्क- ०९६७२२८६८६३, ०९८१०७०२७६०

स्थापना दिवस मनाया- आर्य समाज मन्दिर, महर्षि पाणिनि नगर, मगरा पूँजला, जोधपुर, राज. के तत्वावधान में नववर्ष व आर्य समाज स्थापना दिवस पर पं. ईश्वर शास्त्री के ब्रह्मत्व में नवसम्वत्सर की वैदिक मन्त्रों से विशेष आहुतियाँ प्रदान की गई तथा शास्त्री जी ने उद्‌बोधन में बताया कि जिस प्रकार सूर्य व चन्द्रमा अहर्निश प्राणीमात्र के कल्याण के लिए कार्य करते हैं, वैसे ही हम सभी मनुष्यों को करना चाहिए। पश्चात् गुलाबचन्द आर्य व दीपमाला-पाचाराम (नेत्रहीन) ने ईश्वर व देशभक्ति के भजनों से सभी को आनन्दित कर दिया।

चुनाव समाचार

१६. आर्य समाज विज्ञान नगर, कोटा, राज. के चुनाव में **प्रधान**- डॉ. के.एल. दिवाकर, **मन्त्री**- श्री सुनील दुबे, **कोषाध्यक्ष**- श्री महेन्द्रपाल शर्मा को चुना गया।

१६. आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर, राज. के चुनाव में **प्रधान**- श्री भँवरलाल आर्य, **मन्त्राणी**- श्रीमती ललिता मेहरा, **कोषाध्यक्ष**- श्री अम्बालाल सनाढ्य को चुना गया।

१६. आर्य समाज रामनगर, रुड़की, जि. हरिद्वार, उ.ख. के चुनाव में **प्रधान**- श्री रामेश्वर प्रसाद सैनी, **मन्त्री**- श्री अरविन्द मिनोचा, **कोषाध्यक्ष**- श्री जे.डी. त्यागी को चुना गया।

वैवाहिक

१५. वर चाहिये- आर्यसमाजी परिवार, संस्कारित, जन्म तिथि- १६-०६-१९८९ वर्ष, कद- ५ फुट ४ इंच, शिक्षा- एम.ए., एम.बी.ए., प्रतिष्ठित कम्पनी में सेवारत युवती हेतु आर्यसमाजी परिवार का संस्कारित युवक चाहिए। **सम्पर्क**- ०९९१५७१७५०२ **ई-मेल**- kashyaprp_677@yahoo.co.in

शोक समाचार

डॉ. वीरेन्द्र कुमार आर्य (प्रधान) आर्य समाज तेराजाकेट, जि. कन्नौज का स्वर्गवास दि. २८-०२-२०१६ को हो गया। डॉ. वीरेन्द्र कुमार आर्य ने पूरी सत्यनिष्ठा के साथ अपने पूरे जीवन काल में आर्य समाज का प्रचार-प्रसार किया। ग्रा. होराकट में आर्य समाज की ज्योति को जलाये रखा। परोपकारी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

परोपकारिणी सभा एवं आर्यवीर दल राजस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में

सम्भाग स्तरीय आर्यवीर दल शिविर

का भव्य आयोजन

दिनांक : १५ मई २०१६ रविवार से २२ मई २०१६ रविवार तक

एवं

आर्य वीरांगना शिविर

दिनांक : ३० मई २०१६ सोमवार से ०५ जून २०१६ रविवार तक

स्थान : ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.)

सम्पर्क सूत्र : ०९४६००१६५९०